www.devedunotes.com

प्रसिद्ध
सचित्र कहानियां
अकबर और बीरबल

Rajasthan GK
National GK
World GK
NCERT
Google YouTube
DevEduNotes
हमारी तरह आप भी पढ़े
WWW.DevEduNotes.Com
Current Affairs
News Cutting

MAPLE KIDS

www.devedunotes.com

विषय-सूची

1. उपहार का बंटवारा
2. नकली शेर
3. सड़क के मोड़
4. असली मा
5. जादु की छड़ी
6. पैसों का झोला
7. बेईमान न्यायधीश
8. कंजूस व्यापारी
9. स्वर्ग की यात्रा
10. सुन्दर धोखा
11. कौंओं की गिनती
12. बीरबल और तीन गुड़िया
13. मातृभाषा
14. भक्ति की बात
15. भगवान और भक्त
16. भगवान से महान

17. *अशुभ चेहरा*
18. *बीरबल की खिचड़ी*
19. *मुर्खा व्यक्ति*
20. *खूबसूरत बच्चा*
21. *अनोखा निमंत्रण*
22. *मीठा दंड*

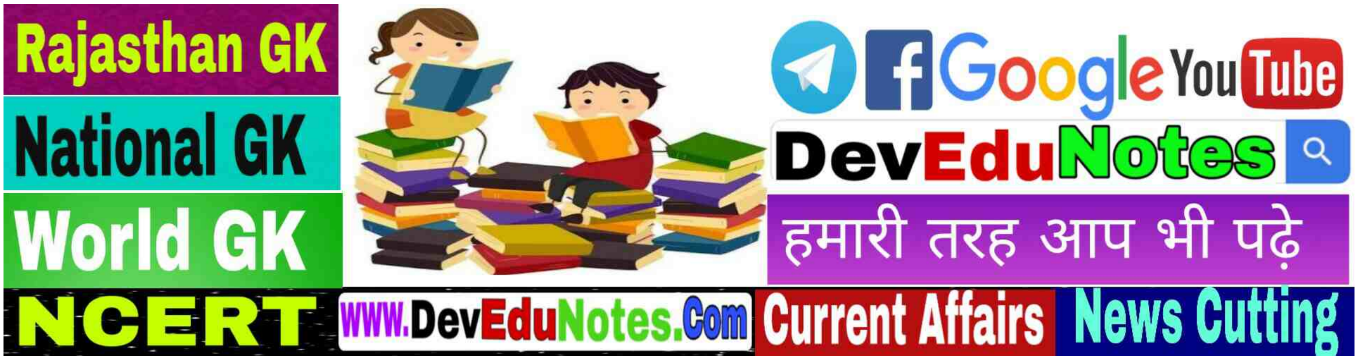
Rajasthan GK
National GK
World GK
NCERT
Google
YouTube
DevEduNotes
हमारी तरह आप भी पढ़े
WWW.DevEduNotes.Com
Current Affairs
News Cutting

उपहार का बंटवारा

This Book is requested from Request Hoarder

बादशाह अकबर को विद्वान और प्रतिभाशाली पुरुषों को अपने दरबार में रखने का बहुत शौक था | जब भी कोई प्रतिभाशाली व्यक्ति उसके राज्य में आता तो वह उसे अपने मंत्रियों में शामिल कर लेते थे | अकबर का दरबार गुणी व बुद्धिमान लोगों से भरा हुआ था | इनमें से नौ लोग अकबर के दरबार में नवरत्नों के रूप में जाने जाते थे | वे असाधारण प्रतिभाशाली और अपने- अपने क्षेत्र में निपुण थे |

उन्हीं दिनों महेशदास नाम का एक युवका अकबर के राज्य में एक छोटे से गंवा में राहता था | उसने अपने पूरा जीवन इसी गंवा में व्यतीत किया था | अब वह दुनिया की यात्रा करना चाहता था | उसने बादशाह के महल व बड़े नगरों के बारे में बहुत सारी कहानियां सुनी थीं | उसे यहां घूमना रोमांचक लग रहा था | उसने निश्चय कीया कि वह बादशाह के दरबार में जाएगा और वहां नौकरी पाने की कोशिश करेगा |

वह बहुत भीड़ वाले बाजारों व नगरों से होकर गुजरा और अंत में शहर पहुंच गया | महेशदास महल के दरवाजे के पास तक तो पहुंच गया, किंतु अंदर प्रवेश नहीं कर सका | व्दारपाल ने उसे पकड़ लिया | उसने पूछा, “आप कहां जाने की सोच रहे हो ?”

महेशदास ने उत्तर दिया, “मैं बादशाह को देखने जा रहा हूं|” व्दारपाल ने जोर से हंसकर कहा “मुझे लगता है उन्होंने तुम्हे व्यक्तिगत रूप से अपने भोजन कक्ष में रात के खाने के लिए आमंत्रित किया है |” महेशदास शांत रहा | व्दारपाल ने पुन: कहा, “तुम्हारे लिए बादशह को देखना संभव नहीं है | वह बहुत ही व्यस्त हैं | मुझे बादशाह का आदेश है कि किसी को भी अंदर नहीं जाने दिया जाए |”

महेशदास ने व्दारपाल से अंदर जाने के लिए आग्रह किया | व्दारपाल ने कहा, “ मैंने तुम्हे कहा न कि मैं तुम्हे अंदर नहीं भेज सकता हूं |” महेशदास ने कहा, “ परंतु क्यों ?” व्दारपाल ने कहा, “क्योंकि तुम गरीब हो | हर व्यक्ति बादशाह को देखने के लिए मुझे कुछ देता है जैसे एक गाय, एक बकरी या कढ़ाई की हुई चप्पल | तुम मुझे क्या दे सकते हो ?”

महेशदास ने कहा, “मेरे पास अभी तो कुछ भी नहीं हे | किंतु मैं वादा करता हूं कि जो कुछ भी मुझे बादशाह से उपहार के रूप में मिलेगा, उसमें से मैं तुम्हे आधा दे दूंगा |“ व्दारपाल

जानता था कि बादशाह एक उदार व्यक्ति हैं | वह अकसर उन्हें देखने के लिए आने वालों को मंहगे उपहार दिया करते हैं | इसलिए व्दारपाल जल्दी से सहमत हो गया |

महेशदास ने महल में प्रवेश किया। वह बहुत मंहगे कढ़ाई किए हुए पर्दे व कालीन देखकर हैरान हो गया। पूरा महल लाल बलुआ पत्यरों से बनाया गया था और बेहद खूबसूरती से सजाया गया था। बादशाह अकबर दरबार के बीच में बैठा था। महेशदास ने अकबर के सामने झुककर अभिवादन किया। अकबर ने कहा, “तुमने मुझे जो सम्मान दिखाया है, उससे मैं बहुत खुश हूं। बताओ बदले में तुम्हें मुझसे क्या चाहिए?” महेशदास ने कहा, “जहांपनाह! यदि ऐसा है तो मुझे सौ कोड़े मेरी नंगी पीठ पर बरसाने का इनाम दें।”

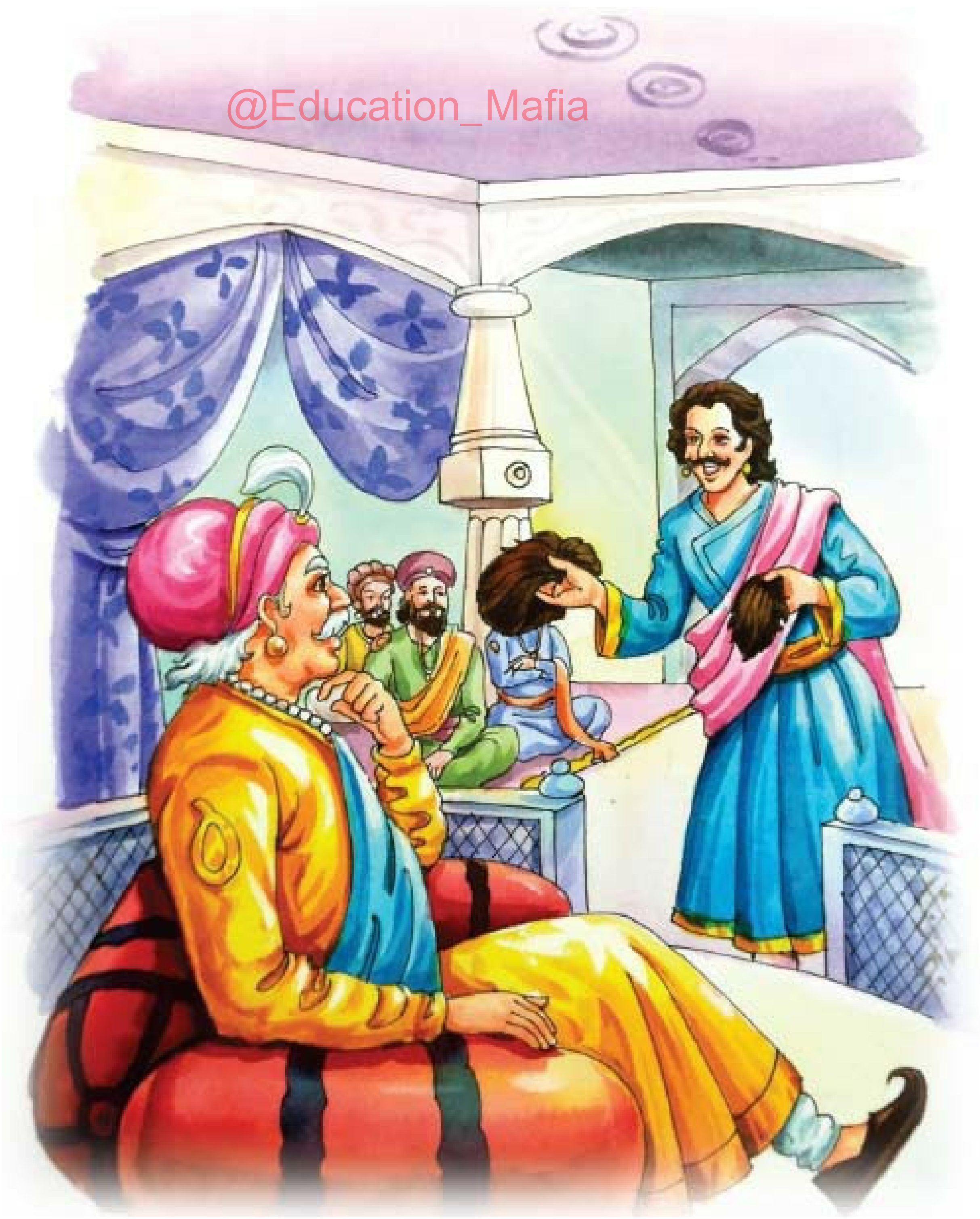

सम्राट बहुत हैरान हो गया | उसने कहा, “यह तो बहुत अजीब इनाम है | तुम क्यों मुझसे ऐसा इनाम मांग रहे हो ?” महेशदास ने कहा, “महाराज! जब मैं आपसे मिलने के लिए आ रहा था, तो द्वारपाल ने मुझ से कहा कि आपसे जो मुझे प्राप्त होगा, उसका आधा मुझे उसे

www.devedunotes.com

www.devedunotes.com

देना होगा | ”

बादशाह अकबर हंस पड़े और बोले, “यह एक गंभीर विषय है | इसका मतलब है कि द्वारपाल अपना काम करने के लिए रिश्वत लेता है | इसकी सजा उसे मिलनी चाहिए |”

द्वारपाल को पकड़कर लाया गया ओर उसे रिश्वत लेने के अपराध में सौ कोड़े मारने की सजा दी गाई। फिर अकबर ने महेशदास से कहा, “तुम बहुत ही चतुर व्यक्ति हो। क्यों नही तुम मेरे दरबार में मंत्री के रूप में शोभा ढ़ाओ?” महेशदास इस अवसर को पाकर बहुत कुश था। उस दिन से बीरबल व उसकी बुद्धि की कहानियां दूर-दूर तक व्यापक रूप से फैलनी शुरू हो गयीं।

नकली शेर

फारस का राजा और बादशाह अकबर बहुत अच्छे दोस्त थे| वे दोनों एक दूसरे को पहेलियां व चुट्कुले भेजा करते थे| उन्हे एक-दूसरे से उपहार प्राप्त करने में आनन्द प्राप्त होता था, जिससे उन्हे अपनी दोस्ती को बनाए रखने में मदद मिलती थी| एक दिन बादशाह अकबर को फारस के राजा से एक बड़ा सा पिंजरा और उसमें नकली शेर तथा एक पत्र प्राप्त हुआ| पत्र में लिखा था, "क्या आपके राज्य का कोई बुद्धिमान व्यक्ति बिना पिंजरा खोले शेर को बाहर निकाल सकता है| यदि पिंजरा खाली नहीं हुआ तो मुगल साम्राज्य, फारस साम्राज्य की संप्रभुता के अधीन आ जाएगा|"

अकबर ने उत्सुकता भरी नजरों से एक के बाद एक सारे दरबारियों की ओर देखा और कहा , “मैं जानता हूं कि आप सभी अपने क्षेत्र में बुद्धिमान और विसेषज्ञ हैं | क्या कोई बिना पिंजरा खोले शेर को बाहर ला सकता है ?“

उसने फिर अपने दरबारियों की ओर उम्मीद भरी नजरों से देखा। प्रत्येक दरबारी अपने – अपने आसन पर जमा हुआ बैठा था। सारे के सारे हैरान और परिशान थे, क्योंकि यह उनकी समझ से परे था। वे एक दूसरे को देख रहे थे। वे सब निराश थे।

उस दिन बीरबल दरबार में अनुपस्थित था। वह कहीं सरकारी कार्य से व्यस्त था। अकबर ने सोचा की काश बीरबल इस समय यहां होता। उन्होंने बीरबल को बुलाने के लिए दूतो को आदेश दिया।

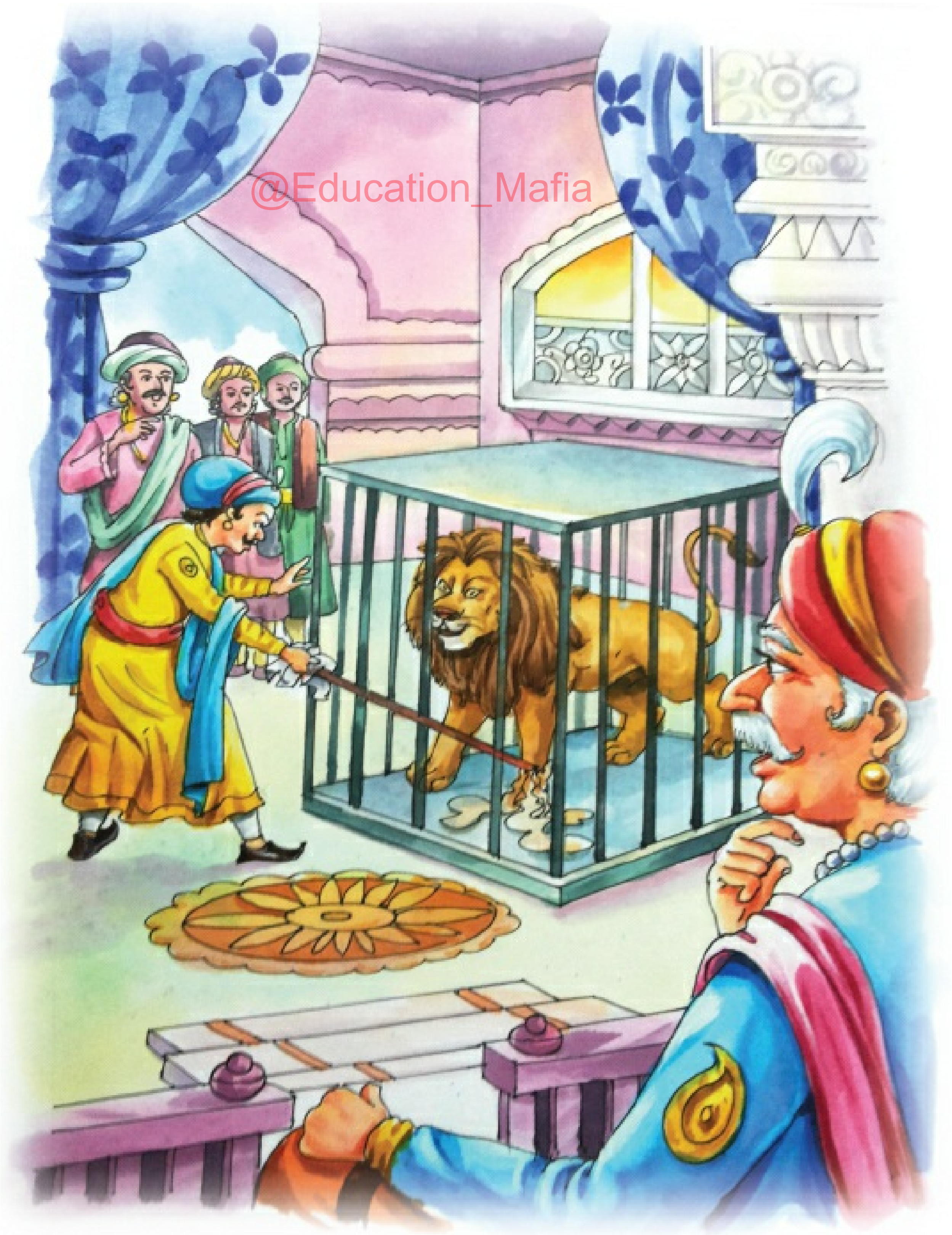

अगले दिन अकबर अपने सिंहासन पर आराम से बैठे हुए थे। बाकी आसनों पर अधिकृत

दरबारी बैंठे हुए थे। एक आसन बीरबल के न आने से खाली था। तभी बीरबल ने दरबार में प्रवेश किया। उसने झुककर बादशाह का अभिवादन किया और कहा, "जहांपनह! मैं आप की सेवा में उपस्थित हूं! मेरे लिए क्या आदेश है?"

अकबर ने संक्षेप मे उसे पूरी बात बताई और फारस के राजा द्वारा भेजा गया पत्र उसके हाथ में रखा दिया। बीरबल ने पत्र पढ़ा और पिंजरे की ओर नजर डाली।

बीरबल ने नौकर को बुलाया और एक लोहे की गर्म छड़ लाने को कहा। नौकर ने तुरन्त ही आदेश का पालन किया। बीरबल ने लोहे की गर्म छड़ से शेर को छुआ। शेर उस जगह से थोड़ा सा पिघल गया। वह तब तक उसे छूता रहा जब तक पूरा शेर पिघल नहीं गया।

फारस का दूत बीरबल की प्रथिभा से बहुत प्रभावित हुआ। अकबर ने बीरबल से पूछा,'' तुमने कैसे जान लिया की यह शेर लाख का बना हुआ है?"

"बीरबल ने उतर दिया , हुजूर ! पत्र के अनुसार यह पिंजरा बिना खोले इसे खाली करना था | लेकिन यह नहीं कहा गया था कि शेर को बरकरार रखना है | मैंने बस यह सोचने की कोशिश की यह लाख का भी बना हो सकता है | "

फारस का दूत दरबारी अपने राज्य वापस चला आया और उसने बीरबल के बुद्धिमानी की एक और कहानी बताई |

सड़क के मोड़

एक बार फारस के राजा ने अकबर को एक अजीब सा पत्र भेजा | इस पत्र में उसने अकबर से पूछा , "बताइये आपके राज्य मैं हर सड़क में कितने मोड़ हैं?" अकबर इस सवाल से हैरान हो गया | उसका राज्य बड़े राज्यों में से एक था | अपने दरबार के मंत्रियों को भेजकर सड़क के मोड़ों की गिनती करवाना संभव नहीं था |

फिर भी सम्राट ने अपने प्रदानमंत्री टोडरमल को बुलाया और यह काम पूरा करने को कहा | टोडरमल ने बदले मैं अपने आदमियों को भेजकर राज्य मैं सड़कों के मोड़ों को गिन कर आने को कहा |

अगले दिन बीरबल ने देखा कि अकबर किसी चीज की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं | क्या कुछ परेशानी है?"

अकबर ने कहा, " हां बीरबल! मैं टोडरमल की प्रतीक्षा कर रहा हूं | उसे मैंने अपने राज्य में सभी सड़कों के मोड़ गिन कर लाने को कहा है |" फिर उन्होंने बीरबल को फारस के राजा व्दारा भेजे गए पत्र के बारे में बताया |

बीरबल ने जैसे ही सारी बात सुनी , वैसे ही वह जोर से हंस पड़ा | बीरबल को हंसता हुआ देखकर अकबर हैरान हो गए | बीरबल ने कहा, "महाराज मैं आपको अपने राज्य की ही नहीं, बल्कि दुनिया के किसी भी शहर की सड़क के मोड़ो की सही संख्या बता सकता हूं |"

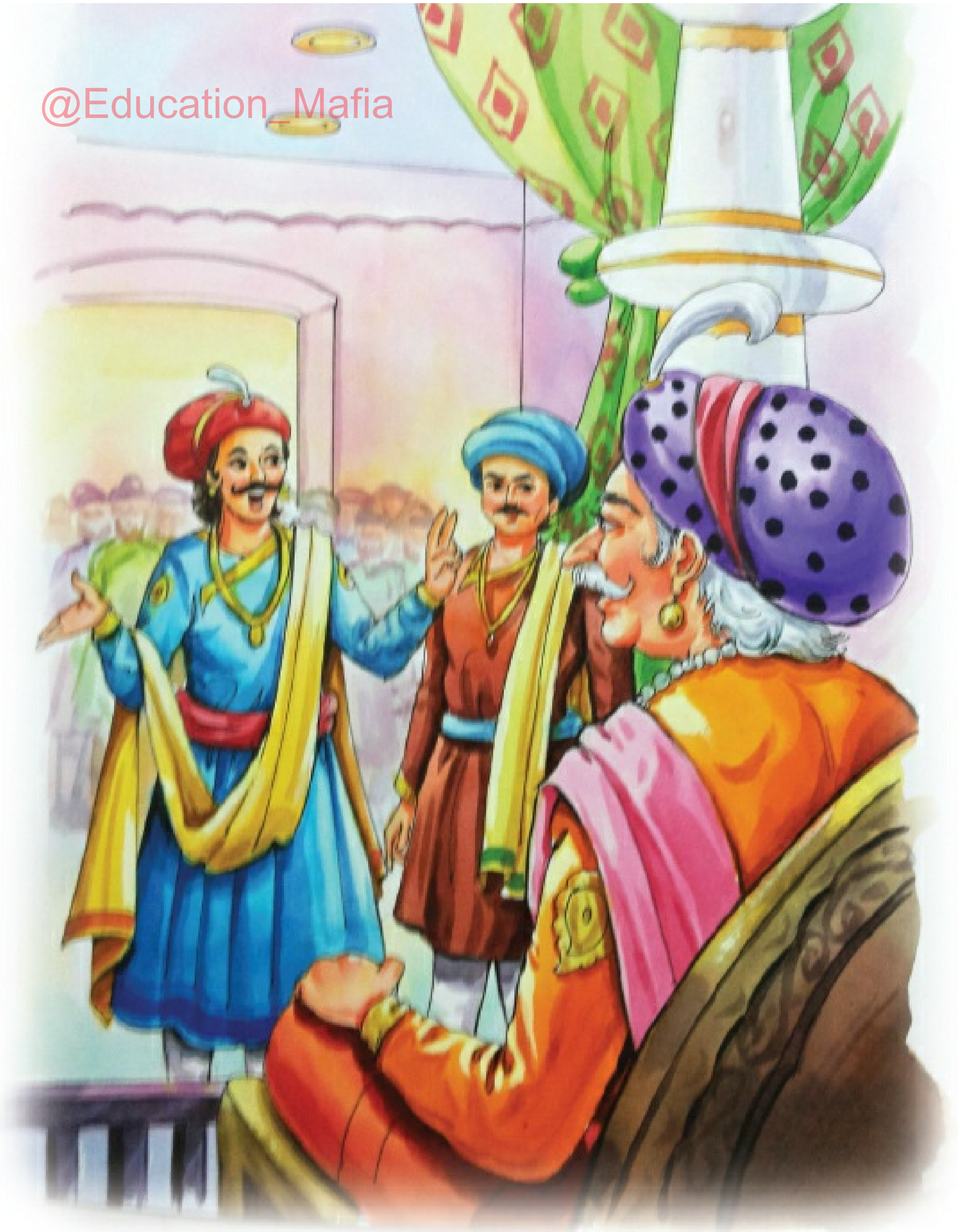

अकबर की आंखे खुली की रह गयी| उसने कहा , "मुझे उम्मीद है की तुम मज़ाक नहीं कर रहे होगे | मैंने कई आदमियों को राज्य की सड़कों के मोड गिनने को भेजा है और तुम कह

रहे हो की तुम यह पहले से जानते हो?"

बीरबल ने कहा , "जहांपनाह! में कोई मज़ाक नहीं कर रहा| दुनिया की सड़कों के केवल दो ही मोड होते हैं| एक दायीं ओर दूसरा बायीं ओर|" यह सुनकर सम्राट ज़ोर से हंस पड़े| यह तो बहुत ही आसान सा जवाब था और मैंने इसके बारे में सोचा ही नहीं| उन्होंने बीरबल को सुंदर सा उपहार दिया और शाही कवि को फारस के राजा के पास इसका जवाब भेजने को कहा|

असली मां

सम्राट का कर्तव्य पृथ्वी पर भगवान की छाया के रूप में काम करते हुए अपने राज्य मे शांति व्यवस्था स्थापित करना, कमजोरों की रक्षा करना और दुष्टों को दंड देना होता है। अकबर को अपनी निष्पक्षता पर गर्व था। आखिरकार वह शहंशाह था। दुनिया उसकी शरण में थी।

एक दिन उसकी शाही अदालत में दो औरतें एक बच्चे के साथ आयीं। वे दोनों फूट-फूट कर रो रही थीं। पहली औरत ने कहा, "जहांपनाह! यह बच्चा मेरा पुत्र है। मैं बहुत बीमार थी और इसकी देखभाल नहीं कर सकती थी। इसलिए मैंने इसे अपनी सहेली के पस छोड़ दिया था। किन्तु अब जब मैं ठीक हो गई हूं, तो यह मुझे मेरा पुत्र देने से इंकार कर रही है।"

इस पर दूसरी औरत ने चीखकर अकबर से कहा, "मेरे भगवान! यह झूठ बोल रही है। यह मेरा पुत्र है और मैं इसकी मां हूं। यह औरत इस तरह की कहानियां सुनाकर मेरे पुत्र को ले जाना चाहती है।"

अकबर यह निश्चय नहीं कर पा रहे थे कि औरतों को कैसे न्याय दिलाया जाए। उसने अपने सबसे बुद्धिमान मंत्री बीरबल को अदालत में बुलाया। बीरबल ने एक के बाद एक दोनों औरतों की बात सुनी और सिर हिलाया। फिर वह अकबर की ओर झुका और बोला, "जहांपनाह! दोनों ही औरतें इस बच्चे की मां होने का दावा कर रही हैं। इसलिए हम इन दोनों को बच्चा दे देते हैं। " बादशाहा के साथ – साथ अदालत ने भी बीरबल को आश्चर्य से देखा।

बीरबल ने व्दारपाल से कहा, "इस बच्चे को पकड़कर शाही कसाई को दे दो और उसे इसके दो भाग करने को कहो। " जब व्दरपाल ने पहली औरत के हाथ से बच्चे को लिया तो वह जोर से चिल्लाइ और बादशाहा को पैरों पर गिर गई। उसने विनती की, "दया मेरे प्रभु! मेरे बच्चे को नुकसान मत पहुंचाओ। दूसरी औरत को ही मेरे बच्चे को रखने दो। मैं अपनी शिकायत वापिस लेती हूं। मैं अपने बच्चे से बहुत प्यार करती हूं और उसे हानी पहुंचते हुए नहीं देख सकती। "

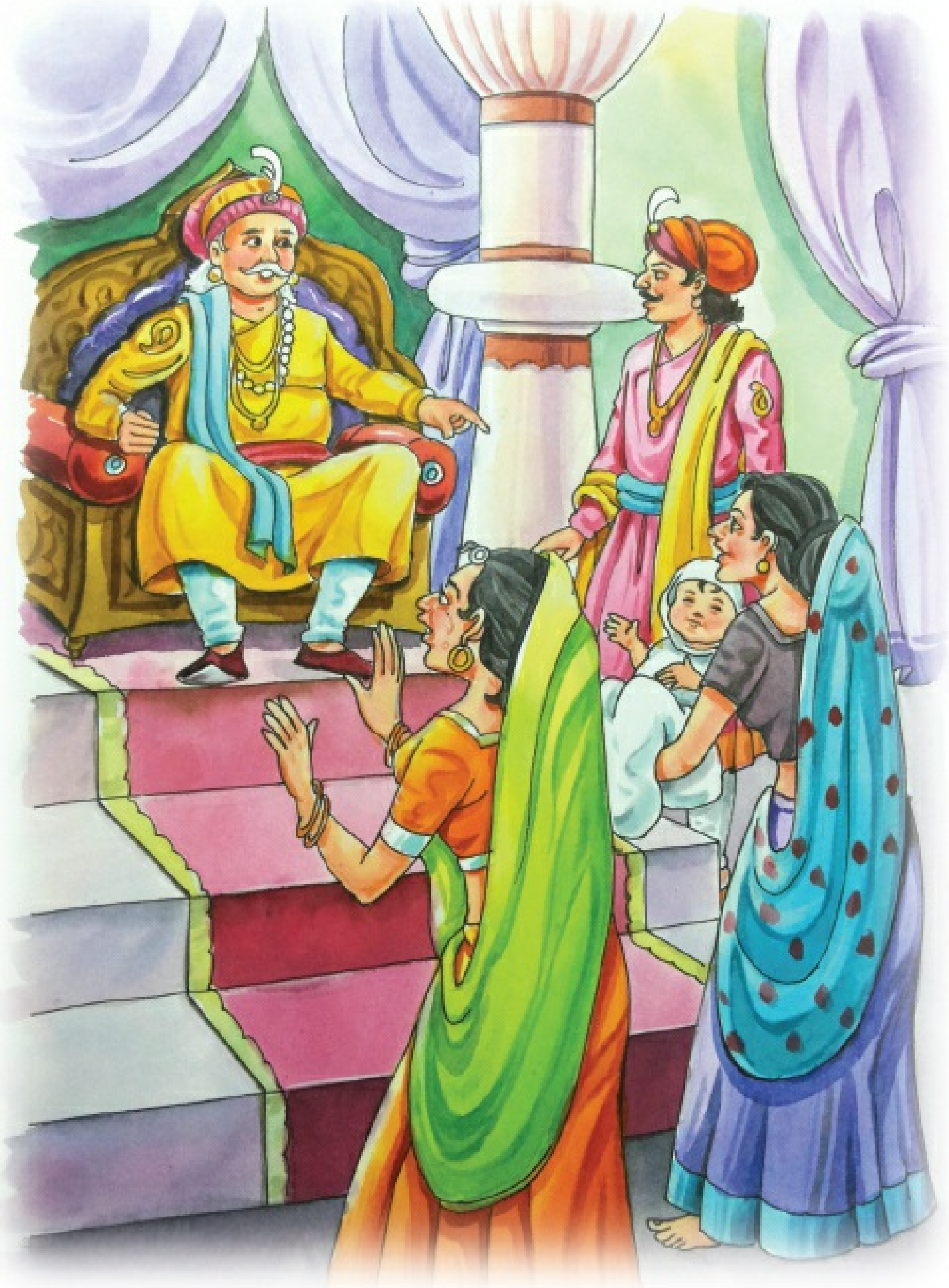

बीरबल मुस्कराया ओर अकबर से बोला, "महाराज! यही बच्चे की असली मां है। एक मां कुछ बी सहन कर सकती है, किन्तु उसके बच्चे को कोही हानी पहुंचाए, यह वह सहन नही कर सकती।"

अदालत में मोजूद हर किसी ने बीरबल की बुद्धि की सराहना की। अकबर ने बीरबल को इस समस्या को सुलझाने के लिए सुन्दर उपहार दिया।

जादू की छड़ी

एक समय मशहूर फतेहपुर सीकरी शहर में एक अमीर तेल का व्यापारी रहता था | उसने अपनी पत्नी को खुश करने के लिए हीरों का एक हार उपहार में दिया | यह हार बहुत ही कीमती था और उस औरत को बहुत पसंद था | वह अक्सर खास कार्यक्रमों में जब उसके दोस्त उससे मिलने आते थे , तब इस हार को पहनती थी | इस तरह औरतों की प्रशंसा से यह हार बहुत प्रसिद्ध हो गया |

किंतु एक दिन जब वह औरत सुबह सोकर उठी तो उसे वह हार कहीं नहीं मोला | उसने हार को बहुत ढूंढा, पर हार कहीं दिखाई नहीं दिया | इस प्रकार उसने यह निष्कर्ष निकाला कि हार चोरी हो गया है|

व्यापारी ने सैनिकों को हार को चोरी करने वाले को ढुढ़ेने भेजा | सैनिकों ने चोर की खोज शुरु की, किन्तु जिसने भी हार चोरी किया था, वह वहुत ज्यादा चालाक था | उसने सैनिको के लिए कोई सुराग नहीं छोड़ी था | इससे व्यापारी की पत्नी दुख के कारण बीमार पड़ गई |

व्यापारी को अपनी पत्नी के स्वास्थ्य की चिंता होने लगी | जब कोई विकल्प नहीं मिला तो उसने बीरबल को यह मामला सुलझाने के लिए बुलाया | बीरबल व्यापारी का बहुत अच्छा दोस्त था | एक दिन बीरबल उसके यहां रात के खाने पर गया | बीरबल व्यापारी से बोला, " वह हार हमेशा तुम्हारी पत्नी की अलमारी में रहता था | यदि यह चोरी हुआ है तो यह आप के नौकरों में से किसी ने किया हैं | अपने सभी नौकरों को बुलाओ, मुझे उनसे बात करनी है |"

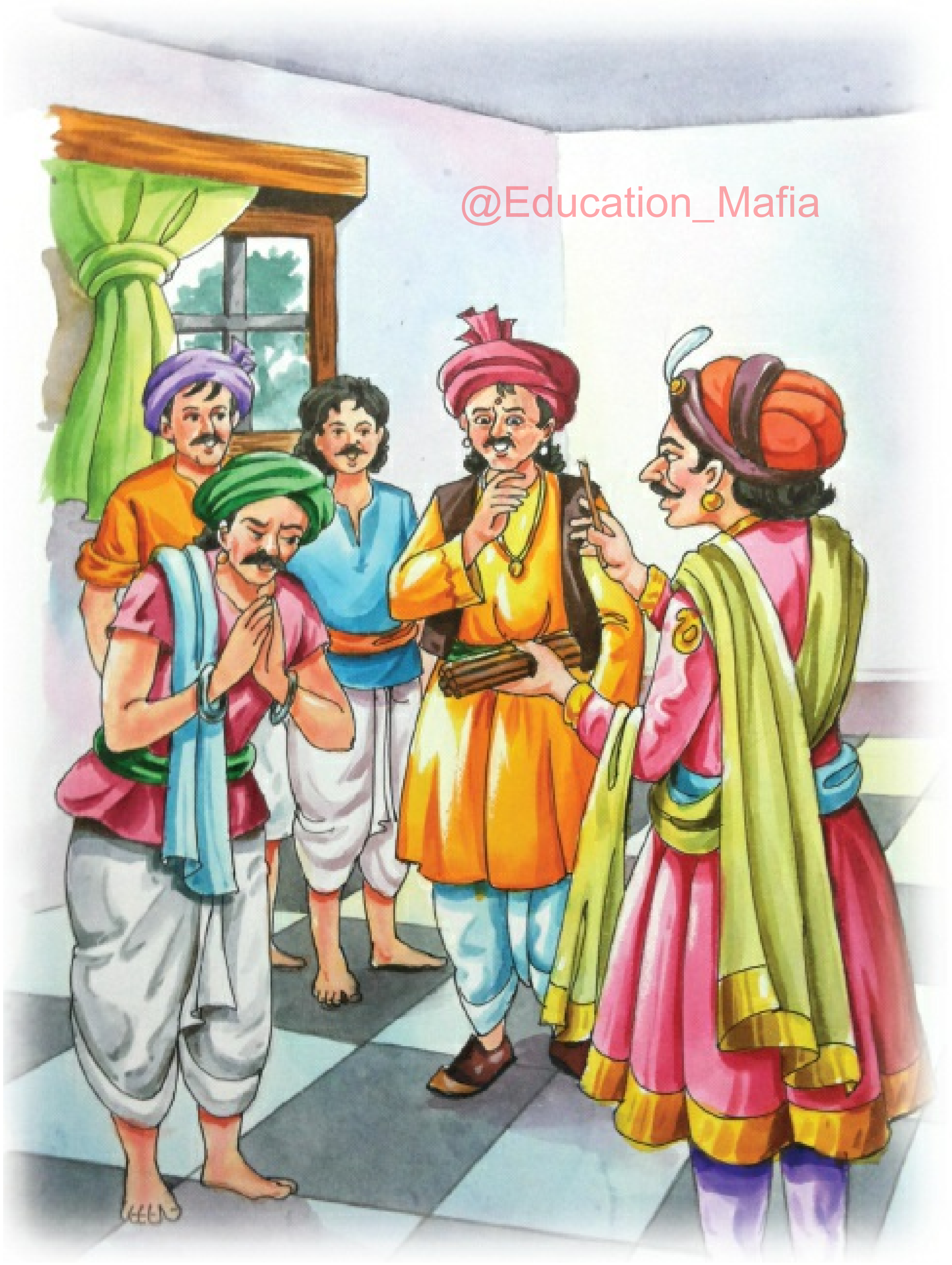

नौकरों को भोजन कक्ष में बुलाया गया | बीरबल ने नौकरों से कहा, "मेरे पास कुछ जादु

की छड़ियां हैं | मैं आप में से प्रत्येक को एक-एक छड़ी दूंगा | कल आप ये छड़ियां मिझे वापिस कर देना |”

नौकरों में से एक नौकर ने कहा, “परंतु आप इन छड़ियों की सहायता से चोर का पता कैसे लगायोंगे ?”

बीरबल ने कहा, “यहा कोई मामूली छड़ियां नहीं हैं | चोर की छड़ी रातभर में दो इंच बढ़ जाएगी | इसलिए मैं कल जब तुम्हारी इन छड़ियों को नापुंगा, तो मुझे पता चल जाएगा कि चोर कौन है |”

यह सुनकर व्यापारी हैरान हो गया, किन्तु उसने कुछ नहीं कहा | अगले दिन नौकरों ने बीरबल को छड़ियां वापस कर दीं | बीरबल ने एक-एक करके छड़ियों को नापा और व्यापारी से कहा, "तुम्हारा रसोइया चोर है |"

हर कोई हैरान था | व्यापारी ने कहा, "तुम ऐसा कैसे कहा सकते हो |" बीरबल ने उत्तर दिया, "मैंने इसको जो छड़ दी थी, वह दो इंच छोटी है | इसने सोचा क्योंकि यह चोर है, इसलिए इसकी छोड़ी दे इंच बढ़ जाएगी | इसलिए इसने इसे दो इंच काट दिया ताकि पकड़ा न जाए |"

व्यापारी हंसा | रसोइये ने हार वापस कर दिया और अपनी नौकरी खो दी | हर किसी ने बीरबल की बुद्दिमानी की तारीफ की |

पैसों का झोला

एक बार आगर शहर में एक कसाई रहता था| वह एक ईमानदार व्यक्ति था, जो न तो मिलावटी मांस बेचता था और न ही मांस का अधिक दाम लेता था | बेहतरीन मांस बेचने के कारण उसके शहर में बहुत सारे ग्रदक थे | शहर में हर किसी को उसकी दुकान के बारे में पता था और वे अपने परिवार व दोस्तों को भी उसकी दुकान की सिफारिश करते थे | थ्योहारों के समय में उसकी दुकान में लोगो की भीड़ लगी रहती थी और वह कसाई पूरे दिन उनकी सेवा में व्यस्त रहता था |

ऐसे ही एक दिन एक अनाज का व्यापारी कसाई की दुकान में आया | कसाई उस समय पैसे गिन रहा था | व्यापारी ने उसे एक किलो मांस देने को कहा | कसाई ने अपना पैसों वाला थैला काउंटर पर रखा और मांस लेने के लिए भंडार घर में चला गया | परन्तु जब वह वापस आया तो यह देखकर हैरान रह गया कि पैसों वाला थैला अब वहां नहीं था | कसाई ने बहुत गुस्से में कहा , “श्रीमन माफ करना, मुझे लगता है आपने मेरा थैला चुराया है | मैं उसे मांस लेने जाने से पहले मेज पर छोड़कर गया था |"

व्यापारी बोला, "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुहे मुझे चोर कहने की | यह मेरे पैसों का थैला है| मैं दुकान से अपने साथ लाया था |"

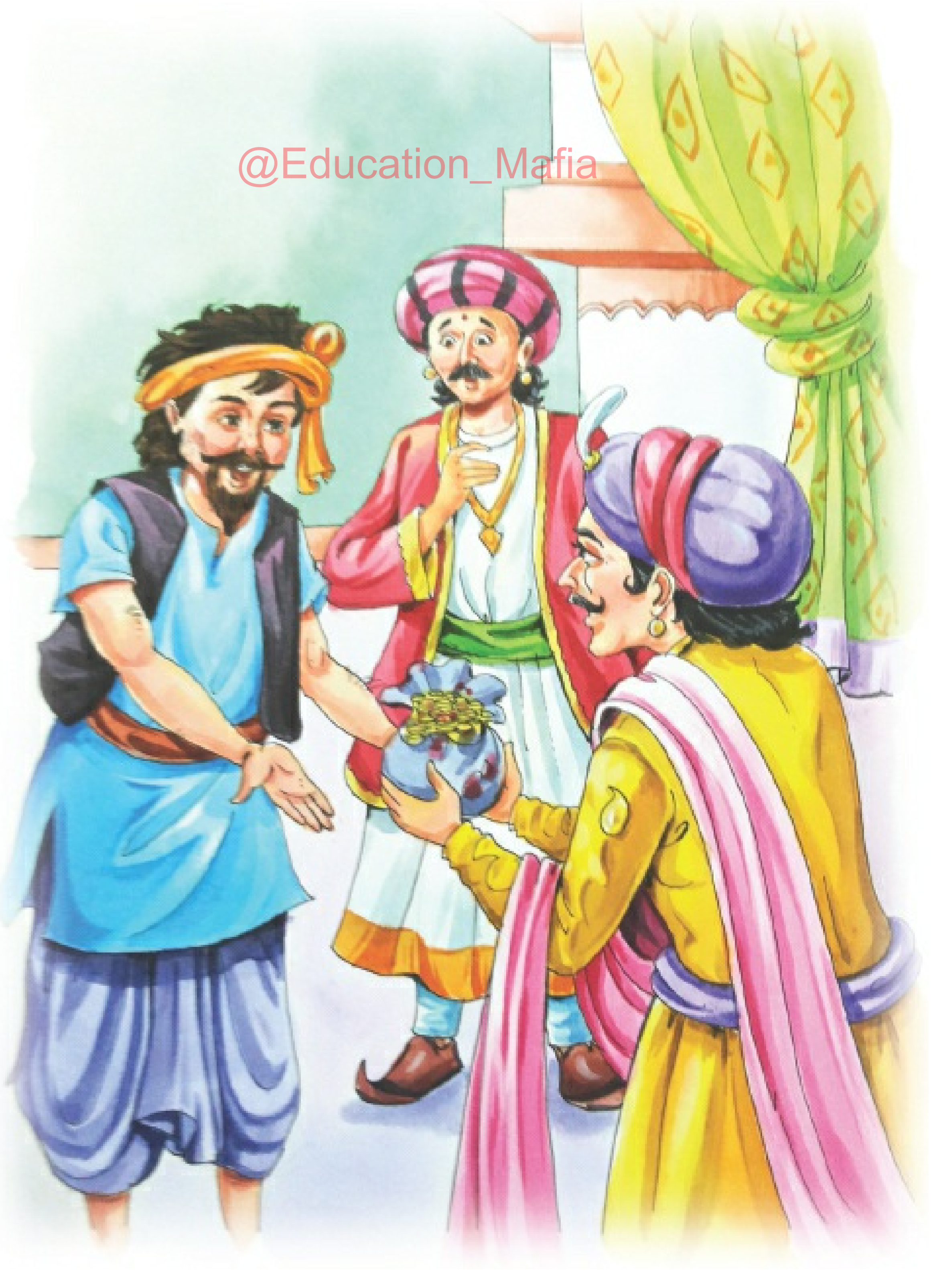

कसाई ने कहा,"मैं तुम पर कैसे विश्वास कर लू की तुम ने मेज से मेरा थैला नहीं लिया है|

व्यापारी ने उत्तर दिया ,"मैं तुम पर कैसे विश्वास कर लू की तुम मेज पर थैला छोडकर गए थे| ये सब तुम इसलिए बता रहे हो, ताकि मैं मजबूर होकर आओना थैला तुम्हें दे दूँ|"

कसाई और व्यापारी की लड़ाई बाहर तक आ गई| बहुत से लोग उनके चारों और ईकट्ठे हो गये| आखिकर किसी ने उन्हें बीरबल के पास जाने का सुझाव यह कहकर दिया कि उसके पास इस समस्या का हल मिल जाएगा| इसलिए व्यापारी और कसाई बीरबल के पास गये|

बीरबल ने ध्यान से पैसें को जांचा परखा। फिर उसने व्यापारी से कहा, "क्या तुम खून का व्यापार करते हो?" व्यापारी हेरान ता। उसने कहा, "नहीं श्रीमान मैं तो अनाज का व्यापार करता हूं। मैं बहुत ज्यादा खून देखकर डर जाता हूं और मुझे चक्कर आने लगते हैं। में इससे जितना ज्यादा हो सके दूर रहने की कोशिश करता हूं।" बीरबल मुस्कराया और उसने थैला कसाई के हाथों में रख दिया। बीरबल ने कहा, "थैले पर खून के धब्बे हैं। कुछ सिक्कों पर भी खून के धब्बे लगे हुए हैं। अगर आपको खून से इतना ही डर लगता है, तो यह बैग आपका नहीं हो सकता है।"

व्यापारी को चोरी के लीए दंड दिया गया। कसाई ने बीरबल को धन्यवाद किया और खुशी-खुशी अपनी दुकान की चल दिया।

बेईमान न्यायाधीश

अकबर का राज्य बहुत ही बड़ा था। इसलिए उसने शहर में लोगों की विभिन्न समस्याओं का समाधान करने के लिए अनेक न्यायाधीशों की नियुक्ति की ।

एक दिन एक औरत सोने के सिक्कें के थैले के साथ एक न्यायाधीश के पास जाकर बोली – " श्रेमान! यह मेरे जीवन की जमा पूंजी है। मैं तीर्थ यात्रा पर जा रही हूं और अपने साथ यह मेरे जीवन की जमा पूंजी है । मैं तीर्थ यात्रा पर जा रही हूं और अपने साथ इतना पैसा नहीं ले जा सकती। कृपया जब तक मैं वापस नहीं आती तब तक यह थैला आप अपने साथ सुरक्षित रख लें।

न्यायाधीश ने थैला अपने पास रख लिया । महिला उसने विदा लेकर तीर्थयात्रा पर चली गई। इक महीने बाद महिला वापस लौटी , तब वह सीधे न्यायाधीश के पास गई और उसने थेला वापस ले लिया । किंतु जब वापस घर आकर उसने थैले की सील थोड़ी , तो उसने ढेखा की थैला पात्थरों से भरा हुआ था। उसका सोना गायब था।

वह न्यायाधीश के पास गई और उसने बहस करने लगी । न्यायाधीश ने कहा , " दुष्ट औरत! तुमने खुद थैले में पात्थर भरे थे और अब मुझे भुगतान करने को कह रही हो । " औरत के पास कोई और रास्ता नहीं था । वह न्याय के लिए बादशाह की अदालत में गई ।

अकबर ने जब कहानी सुनी तो वह बहुत हैरान हुआ। न्यायाधीश एक पुराना और शक्तिशाली आदमी था। अकबर बिना गवाहों के उसे दंड नहीं दे सकता था। इसलिए उसने बीरबल को बुलाया और उसे सब कुछ बताया। बीरबल ने कुछ देर सोचा और फिर उसने अकबर से कहा, “जहांपनाह आज सोने से पहले आप अपने बिस्तर की चादर को देखना। मैं इस मामले को कल हल कर लूंगा।“

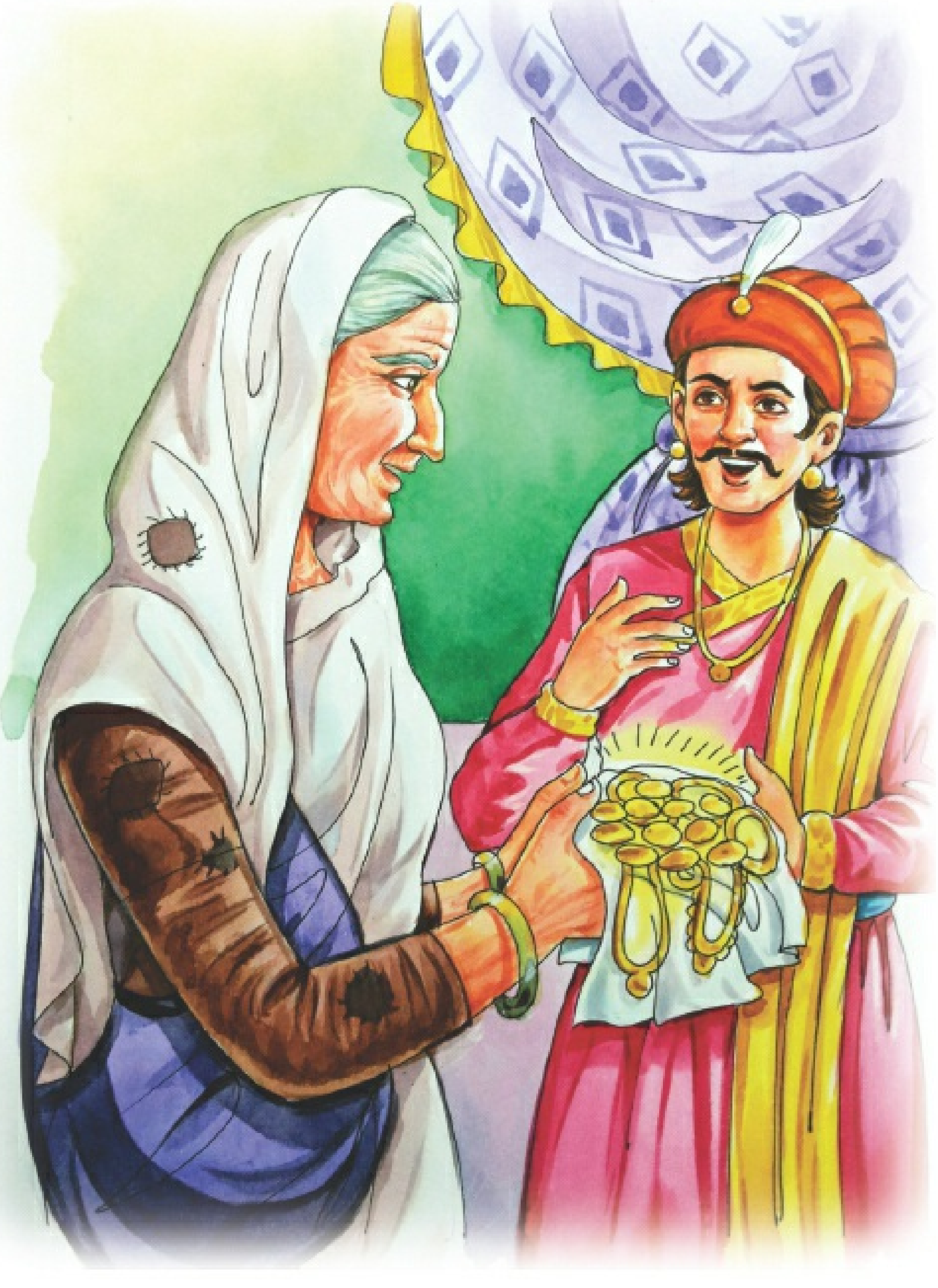

अगले दिन अकबर ने बीरबल को कहा, “मैंने वैसा ही किया, जैसा तुमने मुझ से कहा था

किंतु सुबह जब मैं सो कर उठा, तो देखा कि चादर बिल्कुल नई तरह की दिखी।" बीरबल मुस्कराया और बोला, "जहांपनाह मुझे कुछ समय दीजिए। मैं आपको अपने गवाहा ला कर दूंगा। कुछ समय के बाद बीरबल एक बूढ़े दर्जी को पकड़कर लाया। दर्जी ने कहा, "हां मेरे मालिक! पुराने न्यायाधीश ने एक थैला मुझे सिलाई करने के लिए दिया था। मुझे यह समझ नहीं आया कि उसे सीलने से पहले उसमें पत्थर डालने की क्या जरूरत थी।"

महिला ने थैला बाहर निकाला और दर्जी से पूछा, "क्या वह यही थैला है?" दर्जी ने हां में सिर हिलाया।

अकबर ने न्यायाधीश को बुलाया और उसे पैसे वापस करने को कहा। फिर उसने न्यायाधीश को धोखाधड़ी करने के कारण पचास कोड़े मारने का आदेश दिया।

अकबर ने बीरबल से पूछा कि उसे उस दर्जी के बारे में कैसे पता चला। बीरबल बोला, "जहांपनाह! जब आपने कहा कि सुबह आपकी चादर पहले की तरह नई थी, तो मैंने आपके कमरे की सफाई करने वाली से चादर सिलने वाले दर्जी के बारे में पूछा, तो वह जाकर इसे ले आई। मुझे पता चला कि इस शहर में एक बूढ़ा दर्जी है, जो सिलाई करता है और चीजों को पहले की तरह नई बना देता है। इसलिए मैंने अनुमान लगाया कि यह पैसों वाला थैला भी इसी ने सिला होगा, जो न्यायाधीश ने पैसे निकालने के लिया फाड़ा था।

यह कहानी सुन कर अकबर ने बीरबल की बुद्धि कि बहुत प्रशंसा की।

कंजूस व्यापारी

अकबर के राज्य में हरिनाथ नाम का एक व्यक्ति रहता था। हरिनाथ एक प्रतिभाशाली चित्रकार था। वह चित्र बनाकर अपना जीवन व्यतीत करता था। क्योंकि वह चित्रकारी में बहुत अच्छा था, इसलिए वह पूरे राज्य में प्रसिद्ध था। दूर दराज के क्षेत्रों के अमीर लोग उससे अपना चित्र बनाने का आग्रह करते थे। हरिनाथ एक चित्र बनाने में बहुत समय लगाता था, क्योंकि वह पहले उसकी पूरी जानकारी इकट्ठी करता था और इसी कारण उसके चित्र जीवित प्रतीत होते थे। परंतु वह बहुत पैसे नहीं कमा पाता था और कमाया हुआ अधिकतर धन चित्र बनाने के लिए कच्चे माल की खरीद में खर्च हो जाता था।

एक दिन एक अमीर व्यापारी ने हरिनाथ को एक चित्र बनाने के लिए आमंत्रित किया। हरिनाथ इस उम्मीद से व्यापारी के घर गया कि यह उसे उसके काम के आच्छे पैसे दे देगा। वह कुछ दिनों के लिए वहां रुका और उसने व्यापारी को अपनी चित्रकारी से संतुष्ट करने के लिए कड़ी मेहनत की।

किन्तु व्यापारी एक कंजूस व्यक्ति था। जब कुछ दिनों की कड़ी मेहनत के बाद चित्र पूरा हो गया, तब हरिनाथ उसे व्यापारी के पास ले गया।

कंजूस व्यापारी ने मन में सोचा, "यह चित्र तो वास्तव में बहुत अच्छा है किन्तु यदि मैंने इसकी सुन्दरता की तारीक करी, तो मुझे हरिनाथ को सोने के सै सिक्के अदा करने होंगे।" इसलिए व्यापारी ने चित्र में गलतियां ढूंढनी शुरु कर दीं। उसने कहा, "तुम ने इसमें मेरे बाल सफेद कर दिये और मुझे ऐसा दिखा दिया कि मैं बूढ़ा हो गया हूं। मैं इसका भुगतान नहीं करूंगा।"

हरिनाथ हैरान रह गया। वह नहीं जानता था कि व्यापारी उसे चित्रकारी के पैसे नहीं देना चाहता था, इसलिए चित्र में गलतियां ढूंढ रहा है। हरिनाथ ने कहा, "मेरे मालिक! यदि आप चाहें, तो मैं यह चित्र दुबारा बना देता हूं। इसलिए उसने सफेद बालों को ढक दिया। किंतु व्यापारी ने जब दुबारा बने चित्र को देखा, तो वह उसमें और गलतियां निकालने लगा। उसने कहा, "इसमें तो मेरी एक आंख दूसरी आंख से छोटी है। मैं तुम्हें इस बकवास चित्र के लिए कोई भुगतान नहीं करुंगा।"

हरिनाथ ने फिर से चित्र को सुधारने की पेशकश की चित्र बनाने के लिए कुछ समय

मांगकर वहां से चला गया। हर बार हरिनाथ व्यापारी के पास चित्र लेकर जाता, परंतु वह उसमें और गलतियां दिखाने लगता। अंत में जब हरिनाथ व्यापारी से थक गया तब वह बीरबल के पास सहायता मांगने गया।

बीरबल ने हरिनाथ से कहा कि वह व्यापारी को बीरबल के घर आने के लिए निमंत्रण दे आए। व्यापारी के घर आने पर बीरबल ने व्यापारी से कहा, "यह आदमी कहता है कि इसने जैसा तुम चाहते थे वैसा जीवंत चित्र बनाकर दिया है। किंतु वह तुम्हें पंसद नहीं आया ।"

व्यापारी ने कहा, "सही कहा मेरे प्रभु। यह चित्र कहीं से भी मेरे जैसा नहीं लगता।"

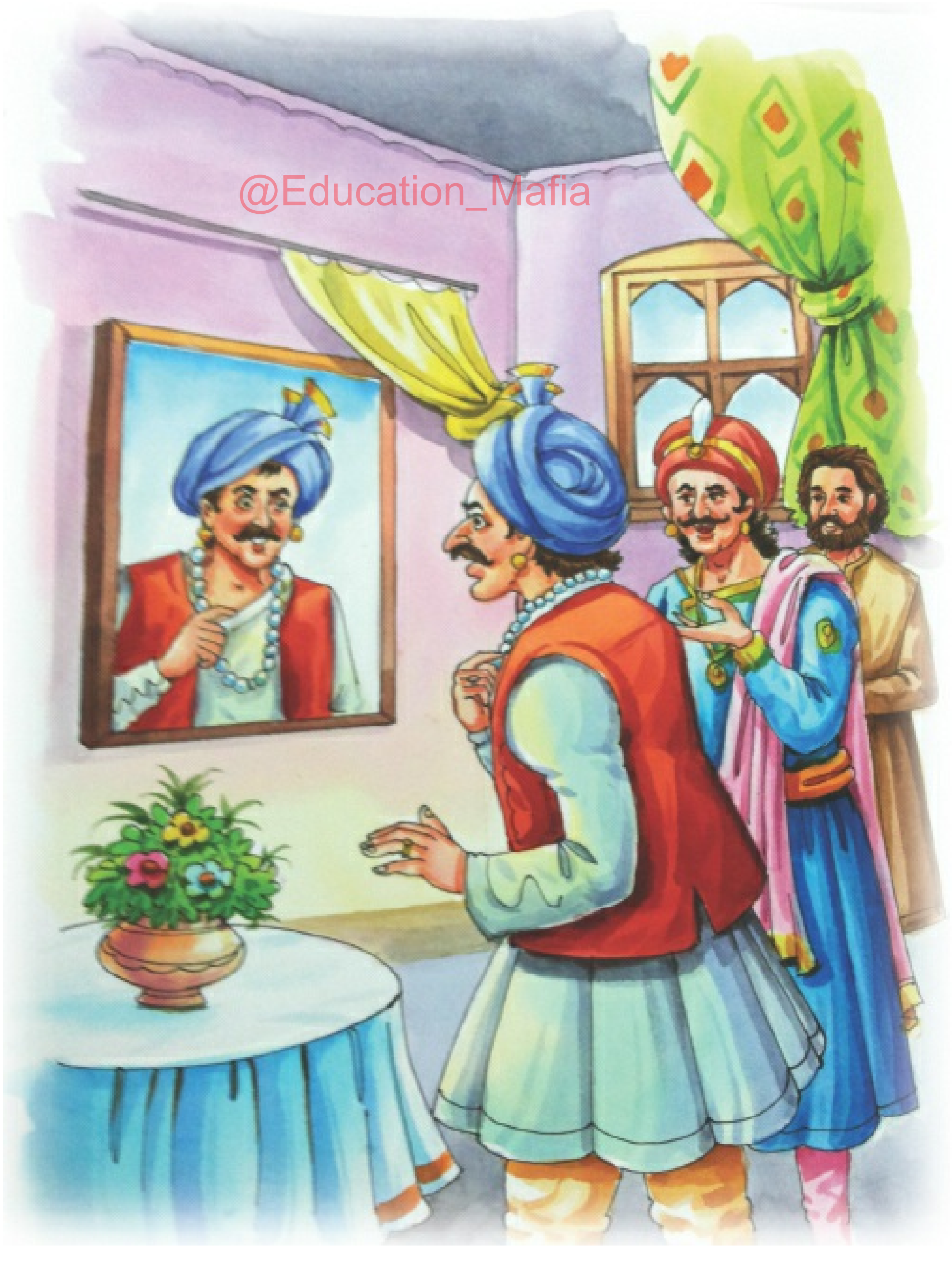

बीरबल ने हरिनाथ से कहा, " ठीक है हरिनाथ! तुम इस आदमी का दूसरा चित्र बनओ जैसे

www.devedunotes.com

की तुमको पसंद हो। फिर वह व्यापारी की ओर घूमा और बोला, "कृपया आप कल आना और अपना चित्र प्राप्त कर लेना। किंतु आपको एक हजार सोने के सिक्के अदा करने होंगे, क्योंकि मैंने देखा है कि हरिनाथ जब कोई चित्र बनाता है तो उसमें कोई लगती नही होती।" व्यापारी ने सोचा चित्रकार एक दिन में जो चित्र बनाएगा, उसमें बहुत गलतियां होंगी। मुझे गलतियां ढूढ़ने में ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेंगी।

अगले दिन जब वह व्यापारी आया, तो बीरबल उसे एक कमरे में ले गया। कमरे में एक चित्र रखा था। वह कपड़े से ढका हुआ था। जब व्यापारी ने कपड़ा हटाया तो वह आश्चर्यचकित रह गया। यह एक चित्र नहीं बल्कि शीशा था। बीरबल ने कहा, "यह बिल्कुल आपकी तरह है। मुझे उम्मीद है कि आपको इसमें कोई गलती नहीं मिलेगी।"

व्यापारी ने महसूस किया कि वह बीरबल से हार गया है। उसे चित्रकार को चित्र के एक सौ सोने के सिक्के के अलावा एक हजार सोने के सिक्के शीशे के लिए भी देने पड़े।

www.devedunotes.com

स्वर्ग की यात्रा

जब से बीरबल बादशाह अकबर को दरबार में शामिल हुआ था, तब से अकबर के दरबार के कुछ मंत्री खुश नहीं थे | अकबर ने बीरबल का पक्ष अधिक लेना शुरू कर दिया था | इस बात ने मंत्रियों को बीरबल से ईर्ष्या करने वाला बना दिया | उन्होंने शाही नाई की मदद लेने का निश्चय किया |

नाई एक गरीब व्यक्ति था | वह मंत्रियों की इस बुरी योजना में शामिल नहीं होना जाहता था किन्तु उनके व्दारा दिए गए सोने के सिक्कों के कारण वह उनका विरोध नहीं कर सका | इसलिए वह मदद के लिए राजी हो गया | एक दिन जब वह अकबर के बाल लाट रहा था तो उसने कहा, "जहांपनाह! कल रात मैंने एक सपना देखा | आपके पिता मेरे सपने में आए और बोले की वह स्वर्ग में आराम से हैं | उन्होंने आपको चिंता न करने को कहा |" अकबर ने जब यह सुना तो वे उदास हो गये | क्योंकि जब उनके पिता मरे थे, तब वे बहुत छोटे थे | वे अपने पिता को बहुत ज्यादा याद करते थे |

वह बोले, "मेरे पिता ने और क्या कहा ? मुझे सब कुछ बताओ |" नाई ने कहा, "जहांपनाह! उन्होंने कहा कि वह ठीक हैं, किंतु थोड़ा बहुत ऊब गए हैं | वह बोले, यदि आप बीरबल को वहां भेज देंगे तो वह उन्हें बहुत खुश रखेगा | वह स्वर्ग से बीरबल को देखते हैं और उसकी बुद्धि और हास्य की प्रशंसा करते हैं |"

अकबर ने बीरबल से कहा, "प्रिय बीरबल! मैं तुम से बहुत खुश हूं | किंतु अपने पिता के पास तुम्हें भेजते हुए मुझे बहुत दुख हो रहा है, जो स्वर्ग में खुश नहीं हैं, वे तुम्हें अपने पास बुलाना चाहते हैं | तुम्हें स्वर्ग में जाना होगा और उनका मनोरंजन करना होगा |"

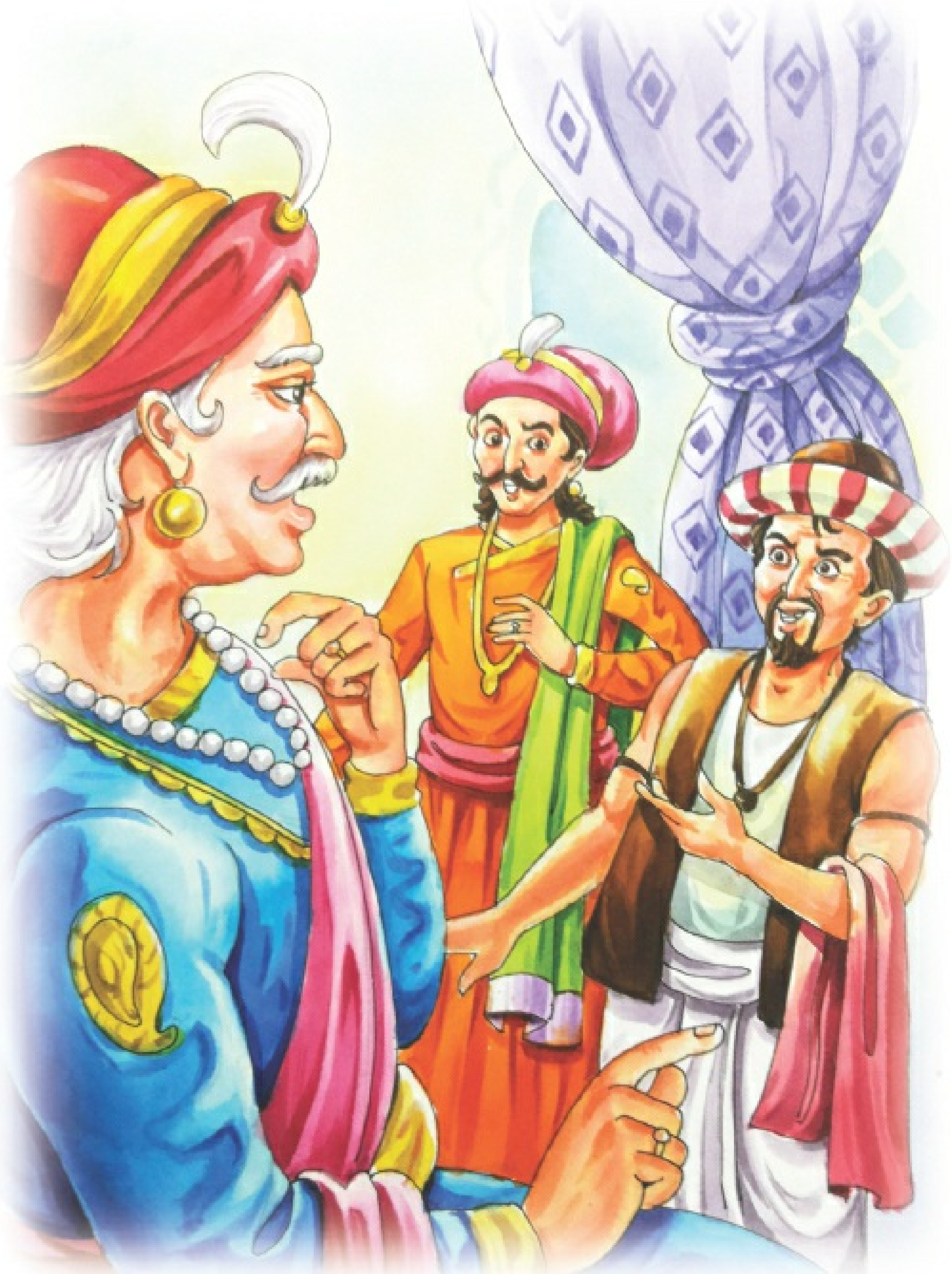

बीरबल ने यह सुना, तो वह चौंक गाया | बाद में उसे पता चला कि यह मंत्रियों और नाई

व्दारा बनाई गई योजना थी | उसने अपने घर के बाहर एक कब्र खुदवाई और कब्र के साथ एक रंग खोदी, जो उसके शायनकक्ष तक जाती थी | फिर वह अकबर के पास गया और बोला, "मैं स्वर्ग जाने के लिए तैयार हूं | किन्तु हमारे परिवार की परम्परा है कि हमें अपने घर के बाहर दफन किया जाता है | मैंने पहले से ही कब्र की व्यवस्था कर ली है | मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि मुझे वहां चींदा दफन कर दिया जाए |"

अकबरन ने बीरबल की इच्छा पूरी की | बीरबल को जिंदा दफन कर दिया गया | बीरबल सुरंग के रास्ते से अपने घर आ गया | तीन सप्ताह बाद वह अकबर के दरबार में गया | हर कोई बीरबल को देख कर हैरान था | अकबर ने कहा, "तुम स्वर्ग से वापस कब आए? मेरे पिताजी कैसे हैं? और तुम इतने भद्दे क्यों दिखा रहे हो?"

बीरबल बोला, "महाराज आपके पिता जी ठीक हैं | उन्होंने आपको अपनी शुभकामनाएं भेजी हैं | किंतु जहांपनाह, स्वर्ग में कोई नाई नहीं है | इस वजह से मैं बहुत भद्दा दिखा रहा हूं | यदि आपकी कृपा हो तो शाही नाई को आपके पिता जी के पास भेजा जाए जिससे उन्हों खुशी मिलेगी |"

सम्राट ने तुरंत आदेश जिया कि नाई को जिंदा दफन करके स्वर्ग भेजा जाए | नाई अकबर के पैरों में गिर गया और क्षमा मांगने लगा | इसके बाद उसने सब कुछ कबूल कर लिया |

अकबर ने यह योजना बनाने वाले सभी मंत्रियों को निकाल दिया और नाई को दस कोड़े मारने का दंड दिया |

सुन्दर धोखा

एक बार बादशाह अकबर के शहर में एक व्यक्ति रहता था | उसके जीने का तरीका अजीब था | वह लोगों को बेवकूफ बनाकर पैसे कमाता था | एक बार वह बाजार मेन एक बहुत अमीर व्यापारी से मिला, जो बाहरी देश से आया हुआ था | वह इस शहर में नया था | इसलिए जब धोखेबाज ने उसे अपने घर रात के भोजन के लिए आमंत्रित किया, तो व्यापारी ने इस उम्मीद से आमंत्रण स्वीकार कर लिया कि इस नये शहर में उसके नये दोस्त बन जाएंगे |

उस रात उनहोंने लाजवाब खाना खाया और बहुत देर तक बातें की | फिर व्यापारी और मेजबान सोने के लिए बिस्तर पर चले गये | अगली सुबह धोखेबाज ने व्यापारी से कहा, "मैंने रात को आपको खाने पर आमंत्रित किया और एक अच्छे मेजबान की भूमिका निभाई | इस बात के लिए आप मुझे कैसे भुगतान करेगें?"

व्यापारी पूरी तरह भ्रमित था | उसने कहा," मैं नहीं जानता कि तुम किस बारे में बात कर रहे हो |" धोखेबाज बोला," आपने मेरा हीरा चोरी कर लिया है | मैं उसे वापस चाहता हूं|" व्यापारी ने कहा," मित्र मैं नहीं जानता कि तुम किस हीरे की बात कर रहे हो | मुझे बिल्कुल पता नहीं है |"

उन दोनें में लड़ाई शुरू हो गई | आखिरकार वे दोनों इसके समाधान के लिए अदालत में जाने को तैयार हो गये | बादशाह अकबर दोनों की कहानी सुनकर हैरान हो गए | उनहोंने बीरबल को यह मामला सुलझाने को कहा |

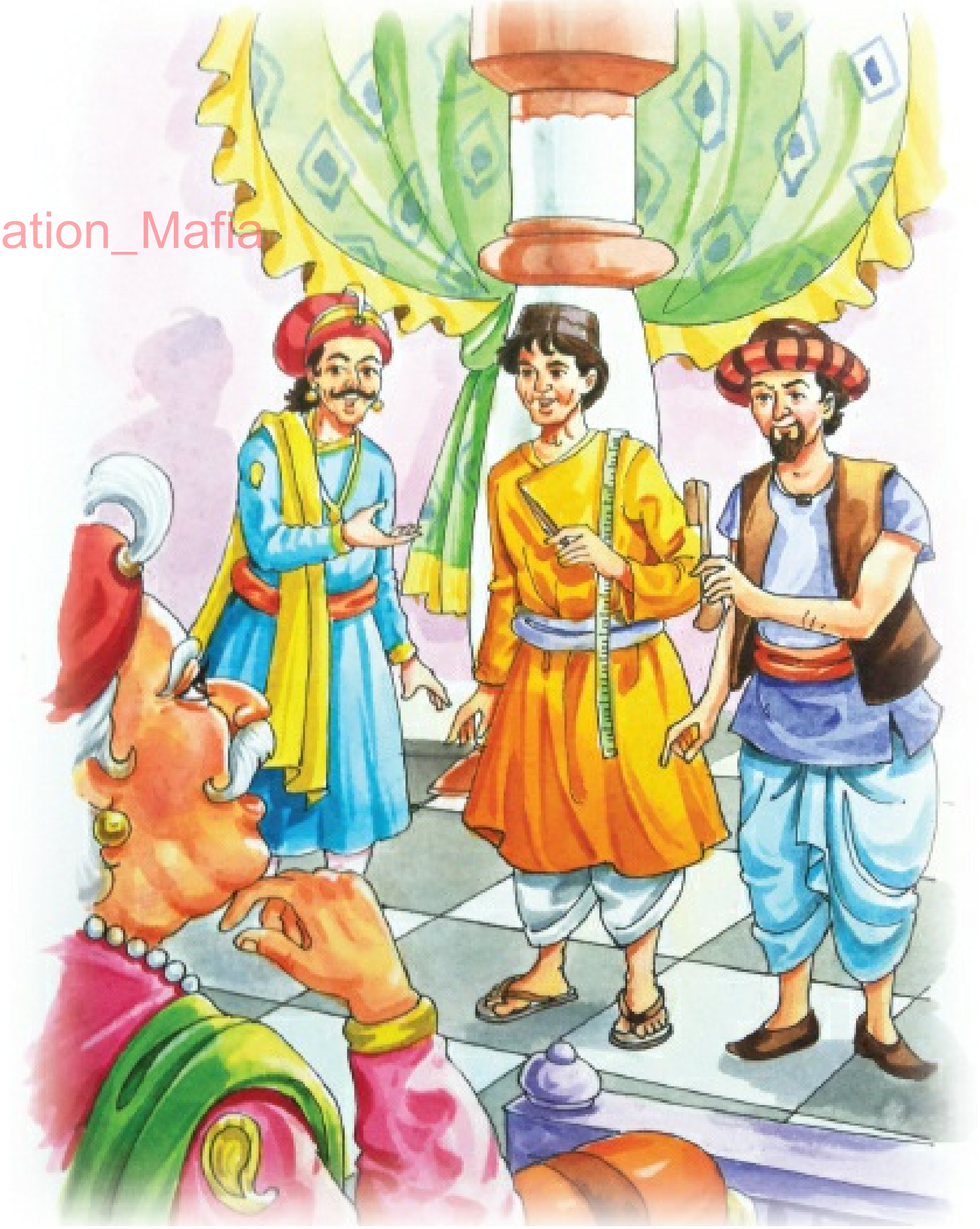

धोखेबाज ने कहा, " महाराज! मेरे पास गवाहा है, जिसने व्यापारी को हीरा चोरी करते हुए देखा है |"

बीरबल ने कहा , " अपने गवाहों को बुलावों | मैं इस बारे में उनसे कुछ पूछना चाहूंगा |"

एक नाई और दर्जी धोखेबाज के गवाह थे | बीरबल ने दोनों को अलग-अलग कमरों में बेठा दिया | फिर उन्हों मिट्रटी का देर देकर हीरे के आकार के रूप में करने को कहा |

नाई ने अपने जीवन में कभी हीरा नहीं देखा था | उसके पिता ने उसे बताया था कि नाई का हीरा उसका उस्तरा होता है | इसलिए उसने मिट्टी को उस्तरो की तरह आकार दे दिया |"

दर्जी की मा ने भी कहा था की दर्जी का हीरा उसकी सुई होती है। इसलिए उसने मिट्टी को सुई की तरह आकार दे दिया।

जब बीरबल ने देखा कि दोनों गवाहों ने क्या बनाया है तो वह बोला , "जहांपनाह! इन दोनों में से किसी ने भी हीरा नहीं देखा है | तो कैसे इन दोनों ने व्यापारी को हीरा चोरी करते हुए देखा है | यह कहानी झूठी है | व्यापारी निर्दोष है | यह साबित होता है कि धोखेबाज ने नाई और दर्जी को झूठे गवाह बनने के लिए रिश्वत दी है |"

व्यापारी खुशी से वापिस अपने घर चला गया , जबकि धोखेबाज को कैदखान में डाला दिया गया |

कौ ओं की गिनती

एक बार पड़ोसी राज्य से एक बहुत प्रसिद्द विद्वान बादशाह अकबर के दरबार में छूमने को आया | वह अकबर के सामने आकार आभिवादन के लिए झुका और कहा, "जहांपनाह ! मैंन बीरबल की बुद्धि के बारे में बहुत सुना है |

दुरदराज क्षेत्रों के लोग अक्सर इनकी बुद्धि की बहुत प्रशंसा करते हैं| महाराज अगर आप की आज़्ना हो तो में इसकी प्रतिभा की परीक्षा लेना चाहता हूं |"

अकबर ने बीरबल को बुलाया और उसका विद्वान व्यक्ति से परिचय करवाया | विद्वान ने कहा, "मुझे बताओ की तुम्हारे राज्य में कितने कोवे रहते हैं ?"

बीरबल ने आराम से प्रश्न सुना और कहा, "मेरे दोस्त मैं निशिचत रूप में कल आपको जवाब दे दूंगा | "दरबार में हर कोई बीरबल और उस विद्वान के बीच हुई बातचीत से हैंरान था | बादशाह अकबर ने बीरबल को अलग बुलाया और कहा, "यह आदमी मुझे पागल नजर आता हैं | इस शहर में कितने कौवे रहते हैं , यह गिनती करना किसी भी व्यक्ति के लिए कैसे संभव है ? तुम्हें सही जवाब जानने के लिए कुछ दिन ले लेने चाहिए थे| तुम एक दिन में उन सभी की गिनती करने में सक्षम नहीं हो |"

बीरबल मुस्कराया और बोला , "जहांपनाह! यह आदमी मुझस चुतराई करने की कोशिश कर रहा है | किंतु आप चिंता नहीं करें | इसे इसकी ही द्वाई का स्वाद मिलेगा |"

अगले दिन बीरबल दरबार में पहुंचा | विद्वान पहले से ही वहां बैठा हुआ था | विद्वान ने कहा , "क्या तुम्हें जवाब मिल गया ?"

www.devedunotes.com

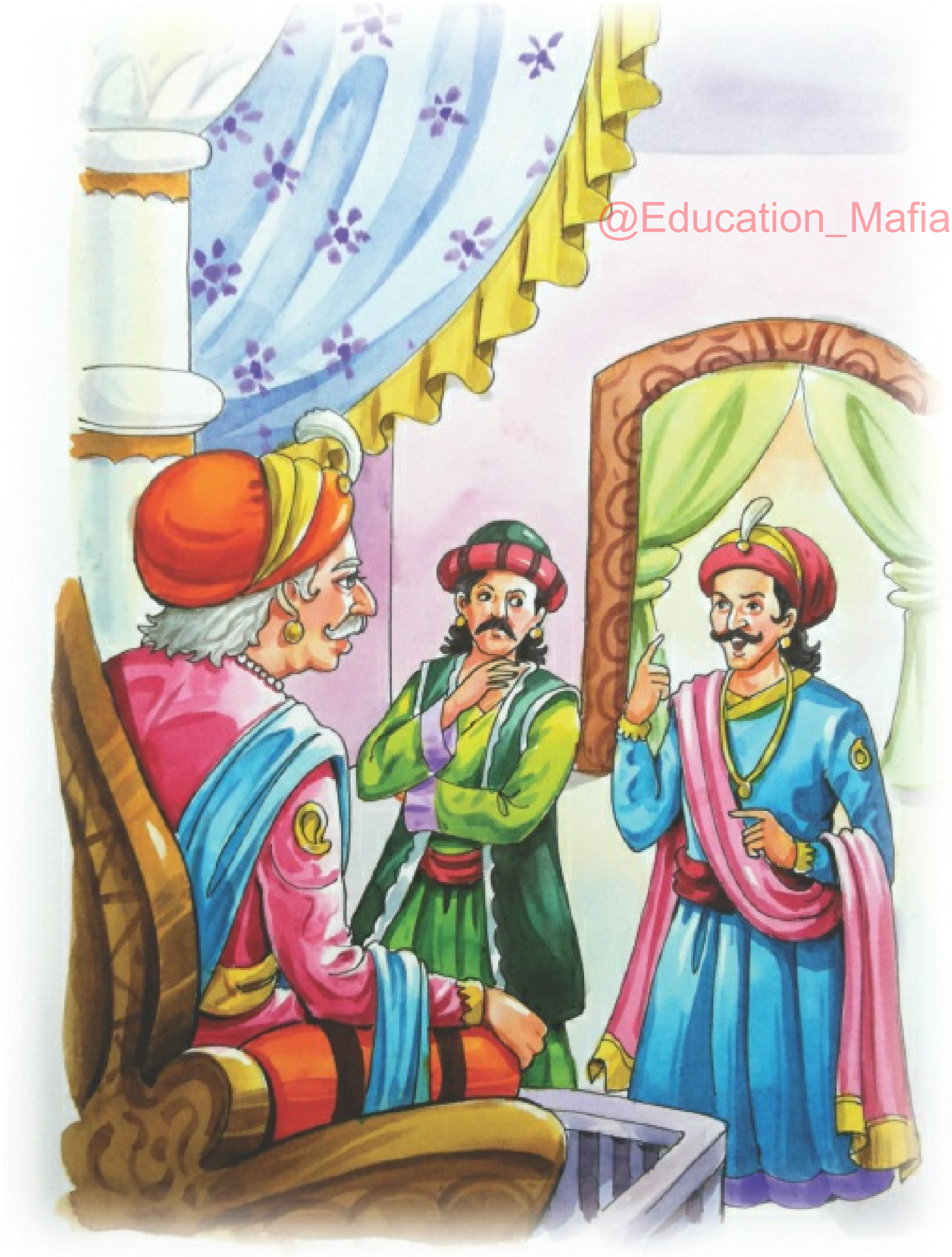

बीरबल ने कहा, "बेशक , इस शहर में निशिचत ही 47835 कौवे रहते हैं |" विद्वान यह

जवाब सुनकर बहुत हैरान था | वह बोला, "आप इतने यकीन से कैसे कहा सकते हैं ?"

बीरबल अकबर की ओर झुका और बोला , "जहांपनाह! मैंनें इस शहर में रहने वाले सभी कौवों की गिनती कर ली है |"

विद्वान बोला,"अगर इससे ज्यादा हुए तो ?"

बीरबल बोला, "वे दूसरे राज्यों से आए हुए होंगे|

विद्वान फिर बोला, "अगर इससे कम हुए तो ?"

बीरबल बोला, "वे दूसरे राज्यों में चले गए होंगे|"

यादि किसी को भी मेरे जवाब में संदेह है, तो वह अपनी संतुष्टि के लिए गिनती कर सकता है |"

अकबर जोर से हंसा | विद्वान ने जब बीरबल का जवाब सुना, तो उसे अपने आप पर बहत शमे आई | वह उसी दिन उस शहर से इस निश्चय के सथा चला गया कि अब से वह किसी को भी चुनौती नहीं देगा |

बीरबल और तीन गुड़िया

एक बार एक कलाकार तीन सुंदर गुड़ियों को लेकर बादशाह अकबर के दरबार में आया। ये गुड़िया बिल्कुल एक समान थी। उनमें इतनी समानता थी की उनके बीच अंतर करना बहुत मुश्किल था। अकबर को गुड़िया बहुत प्यारी लगीं। उसने कहा, "ये गुड़िया मुझे बेच दो और मैं तुम्हे इनकी अच्छी कीमत दूंगा।"

कलाकर ने कहा, "जहांपनाह! ये गुड़िया बेचने के लिए नहीं हैं। बेशक मैं आपको ये उपहार के रूप में दे दूंगा यदि आपको दरबार में कोई यह बता दे की तीनों में से अच्छी कौन सी है।" यह एक अजीब पहेली थी। अकबर ने गुड़ियों को उठाया और करीब से देखा। किंतु तीनों गुड़ियों में इतनी समानता थी कि अकबर यह नहीं कह सका कि कौन सी अच्छी है। तब उसके प्रत्येक मंत्री ने इस पहेली को सुलझाने कि कोशिश की, परंतु वे असफल रहे।

अकबर ने बीरबल को बुलाकर कहा, "प्रिय बीरबल तुम क्यों नहीं कोशिश करते। मुझे विश्वास है कि तुम इस पहेली को हल कर लोगे।" बीरबल अकबर की ओर सम्मान से झुका और गुड़ियों के पास गया। उसने प्रत्येक गुड़िया को हाथ में उठाया और बड़ी बारीकी से उनको देखा। हर कोई आश्चर्यचकित था। उसने एक गुड़िया के कान मे फूंक मारी। हवा उसके दूसरे कान से बाहर आ गई। फिर उसने दूसरी गुड़िया को कान में फूंक मारी, किंतु इस बार हवा उसके मुंह से निकली| जब बीरबल ने तीसरी गुड़िया के कान में फूंक मारी तो हवा कहीं से भी बाहर नहीं निकली|

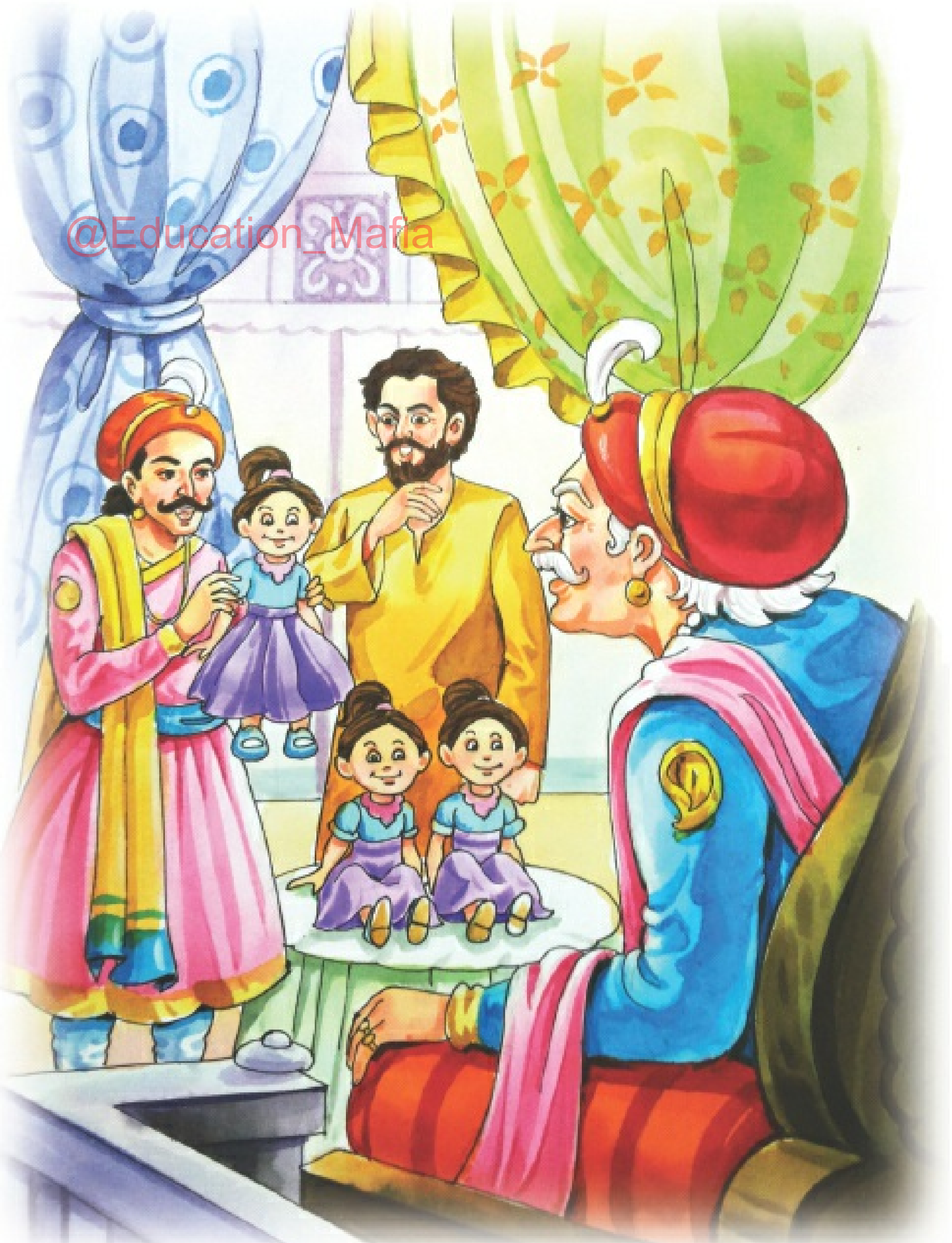

बीरबल ने कहा, "जहांपनाह! यह तीसरी गुड़िया ही इन तीनों में सबसे अच्छी है|" अकबर

हैरान हो गया| उसने कहा, "तुमने यह कैसे जान लिया?"

बीरबल ने कहा, "मेरे मालिक! यह तीनों गुड़िया तीन व्यक्तियों की तरह है| जब मैंने पहली गुड़िया के कान में फूंक मारी, तो यह दूसरे कान से बाहर आ गाई| ऐसे ही जब हम एक रहस्य किसी दूसरे व्यक्ति को बताते हैं तो वह अगले ही पल उसे उसे भूल जाता है|

जब मैंने दूसरी गुड़िया के कान में फूंक मारी, तो वह उसके मुंह से बाहर निकल गयी| ऐसे ही कुछ व्यक्ति जो कुछ सुनते हैं, उसे शीघ्र ही दूसरे व्यक्ति को बता देते हैं| ऐसे व्यक्ति कभी रहस्य को छुपाकर नही रख सकते| किंतु जब तीसरी गुड़िया के कान में फूंक मारी, तो हवा कहीं से भी बाहर नहीं आई| इस तरह के व्यक्ति अच्छे होते हैं, जो रहस्य को छुपकर रखते हैं| आप इन्हें कोई भी रहस्य की बात बता सकते हैं|

कलाकार ने कहा, "मैंने अभी तक केवल बीरबल के बारे में सुना था, किंतु आज मैंने इसे देख भी लिया| जहांपनाह, ये गुड़िया आपकी हैं|"

अकबर ने कहा उसे बीरबल पर बहुत गर्व है|

मातृ भाषा

एक बार एक अजनबी व्यक्ति बादशाह अकबर के दरबार में आया और बादशाह के सम्मान में जुककर उसने कहा , “जहांपनहा ! मैं बहुत सारी भाषाओं में बात कर लेता हूं | मैं आपकी बहुत अच्छी सेवा कर सकता हूं ,यदि आप मुझे अपने दरबार में मंत्रियो में शामिल कर लें |”

बादशाह ने उस व्यक्ति की परीक्षा लेने का निश्चय किया | उसने अपने मंत्रियों को उस आदमी से विबिन्न भाषाओं में बात करने को कहा | अकबर के दरबार में अलग-अलग राज्यों के लोग रहते थे | हर किसी ने उससे अलग-अलग भाषा में बात की | प्रत्येक मंत्री जो आगे आकर उससे अपनी भाषा में बात करता , वह व्यक्ति उसी भाषा में उत्तर देता था | सारे दरबारी उस व्यक्ति की भाषा कौशल की तारीफ करने लगे |

अकबर उससे बहुत प्रभावित हुआ | उसने उसे अपना मंत्री बनने की पेशकश की | किन्तु व्यक्ति ने कहा , “मेरे मालिक ! मैंने आज कई भाषाओं में बात की | क्या अपके दरबार में कोई है , जो मेरी मातृभाषा बता सके |”

कई मंत्रियों ने उसकी मातृभाषा बताने की कोशिश की , परंतु असफल रहे | वह व्यक्ति मंत्रियों पर हंसने लगा | उसने कहा , “मैंने यहां के बारे में सुना है कि इस राज्य में बुद्धिमान मंत्री रहते हैं | किंतु मुझे लगता है कि मैंने गलत सुना है | “ अकबर को भहुत शामिर्दंगी हुई| वह बीरबल की ओर सहायता के लिए कुछ करो |”

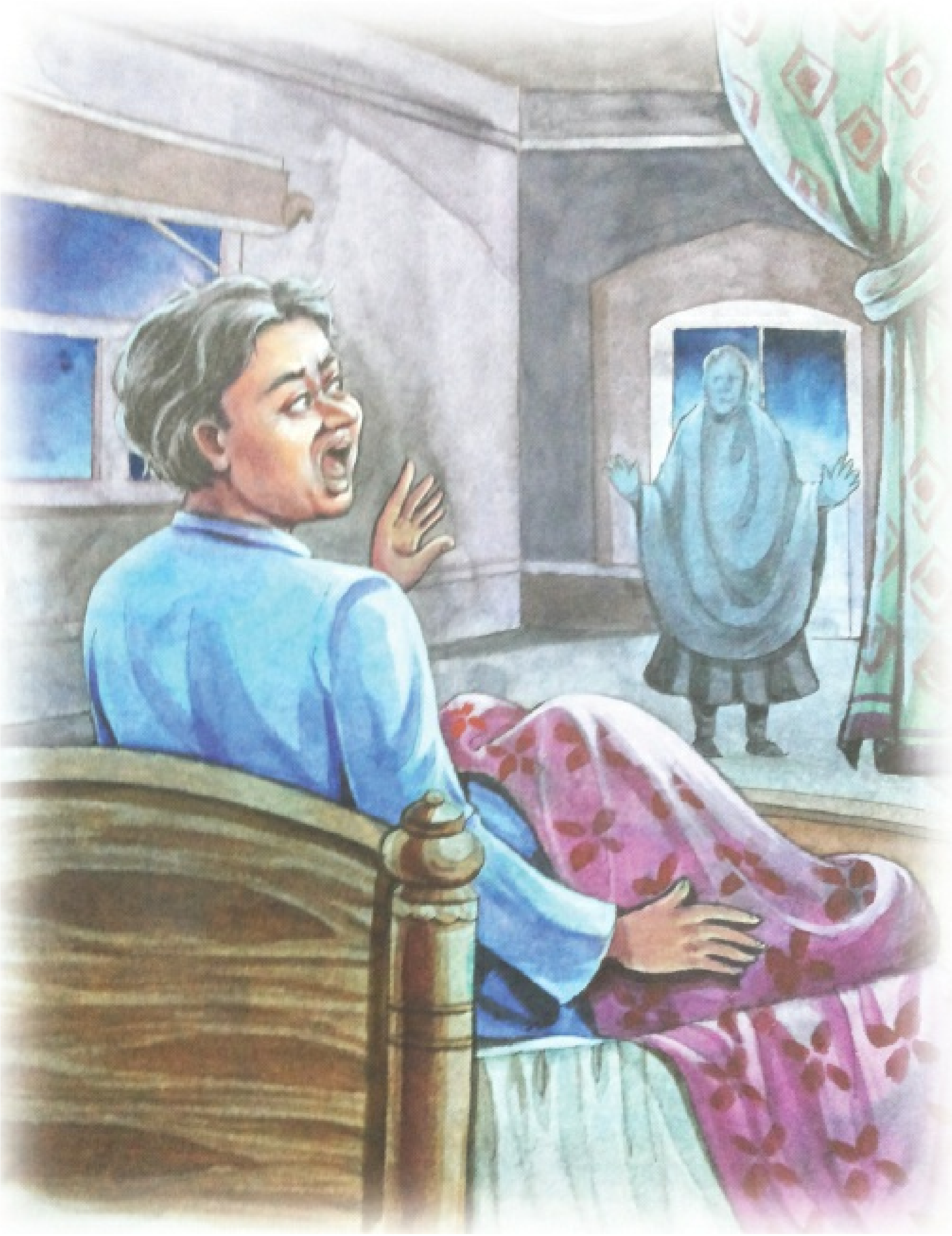

बीरबल ने उस व्यक्ति से कहा, " मेरे दोस्त ! आप थके लग रहे हैं | आपने निश्चय ही यहां

दरबार तक आने में बहुत लंबा रास्ता तय किया है | कृपया आज आप आराम करें | मैं कल सुबह आपके प्रश्न का जवाब दे दूंगा | " वास्तव में व्यक्ति बहुत थका हुआ था | उसने बादशाह से जाने की आज्ञा ली और चल दिया | उसने स्वादिष्ट खाना खाया और शाही अतिथि कक्ष में आराम करने चला गया |

सभी मंत्रियों के जाने के बाद अकबर ने बीरबल से कहा, "तुम इस व्यक्ती के प्रश्न का उत्तर कैसे दोगे ?" बीरबल ने कहा ," जहांपनाह ! चिंता नहीं करें | मेरे पास एक योजना है|"

उस रात जब महल में हर कोई गहरी नींद में सो रहा था, तब बीरबल ने काला कम्बल अपने चरों ओर लपेटा और चुपके से अजनबी व्याक्ति के कक्ष में गया | बीरबल ने घास की टहनी से व्याक्ति के कान में गुदगुदी की | व्यक्ति तुरंत उठ गया | किंतु जब उसने अंधेरे में काले शरीर वाला देखा तो उसने सोचा कि वह भूत है | उसने उड़िया भाषा में चिल्लाना शुरू कर दिया, " हे भगवान जगन्नाथ, मुझे बचाओ ! मुझ पर भूत ने हमला कर दिया है |"

अचानक बादशाह ने अपने मंत्रियों सहित कक्ष में प्रवेश किया | बीरबल ने कम्बल को फर्श पर फेंक दिया और कमरे में प्रकाश कर दिया | उसने व्यक्ति से कहा, " तो तुम उड़ीसा निवासी हो और तुम्हारी मातृभाषा उड़िया है | मैं सही कह रहा हूं ना ?" व्यक्ति ने बीरबल से कहा कि वह सही है |

अकबर ने कहा , "एक आदमी चाहे कितनी भी भाषाएं बोल ले , लेकिन वह जब डरता है तो अपनी मातृभाषा में ही चिल्लाता है |" बीरबल ने पहेली को हल कर दिया | अकबर ने उसकी चतुराई के लिए उसकी प्रशंसा की |

भक्ति की बात

बादशाह अकबर को अनेक कलाओं से प्रेम था , परंतु उन्हें संगीत का ज्यादा शैक था । उनको दरबार के नें रत्नों में से एक तानसेन थे , जो अपने संगीत की वजह से सम्मन से जाने जाते थे।

एक बार अकबर तानसेन के संगीत से बहुत खुश हुए और उन्होंने तानसेन से कहा , " तुम दुनिया के सबसे अच्छे कलाकार हो । तुम्हारा संगीत बहुत महान है , जिसकी किसी से तुलना नहीं की जा सकती । "

तानसेन आभर के साथ अभिभूत थे , किंतु वह एक समन्य व्यक्ति थे । उन्होंने कहा , " यह केवल आपकी राय है । दुनिया में बहुत से कलाकार मुझ से बेहतर हैं । "

अकबर ने कहा , " तानसेन मैंने बहुत संगीतकारों को सुना है । किंतु तुमहार संगीत उन सबसे बहुत अच्छा है । "

तानसेन ने कहा , " मेरे मालिक ! फिर तो आपको मेरे गुरु स्वामी हरिदास को जरूर सुनना चाहिए । वह मुझसे बहुत अच्छा गाते हैं । "

अकबर ने बहुत उत्सुकता से कहा , " यदि ऐसा है तो मैं तुम्हारे गुरु का संगीत जरूर सूनुंगा । तुम्हें उसने मेरे लिए संगीत गाने का अनुरोध करना होगा।"

तानसेन ने कहा, "मेरे मालिक! स्वामी हरिदास कभी दरबार में नहीं आते है और न ही वह आपके लिए गायेंगे। किंतु यदि आप मेरे साथ उनके घर जाएंगे, तो आप उनका संगीत सुन सकते हैं।“ अकबर, बीरबल तानसेन के साथ स्वामी हरिदास के घर जाने को राजी हो गए।

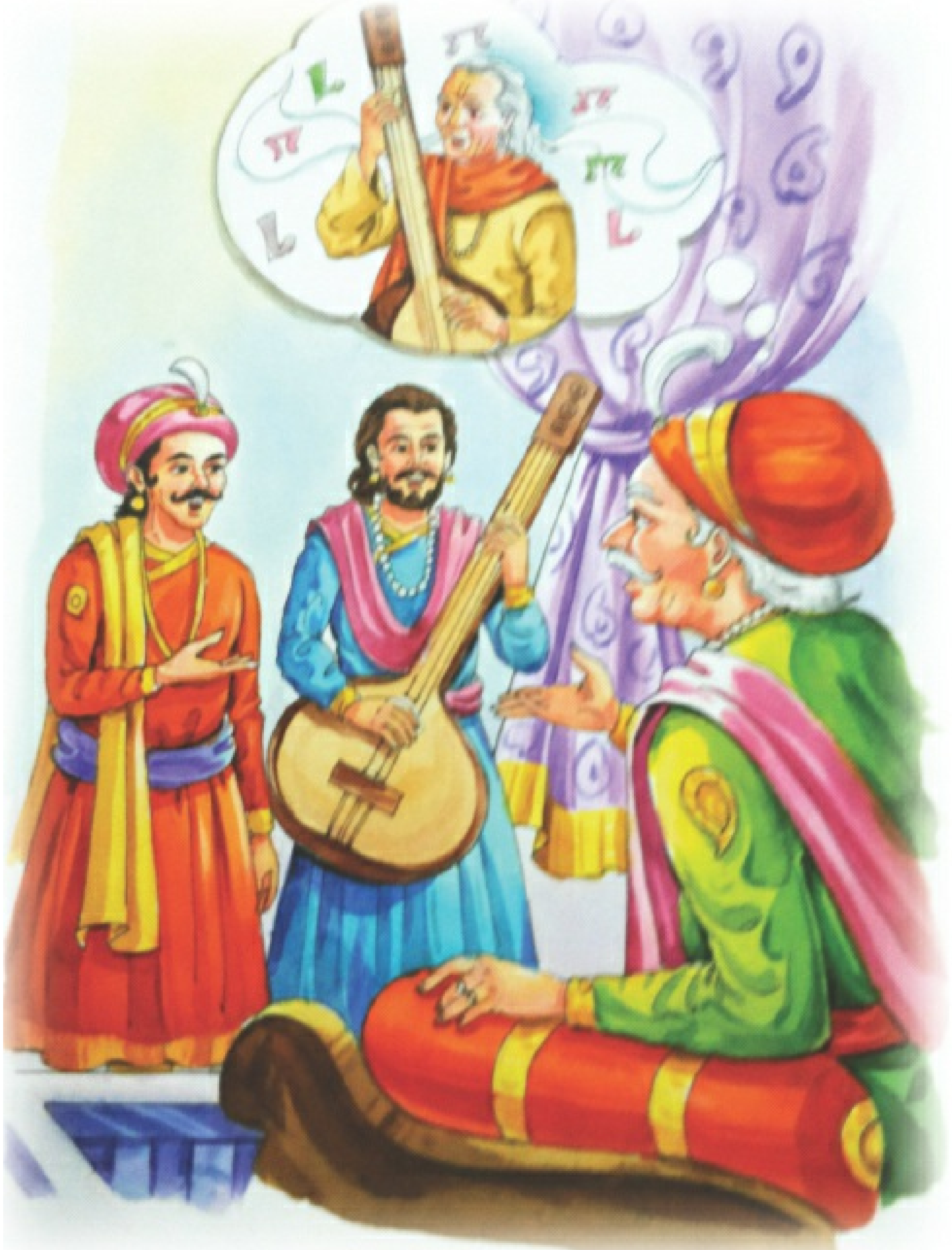

अकबर स्वामी हरिदास के घर कुछ दिनों तक रुके किंतु गुरु ने उस बीच में कुछ भी नही गाया। अकबर अधीर हो रहे थे। उन्होंने तानसेन को बुलाया और कहा, “स्वामी हरिदास कब गायेंगे? मैं यहां चार दिन से हूं किंतु अब तक उन्होंने संगीत का एक शब्द तक नही गाया। लगता है मुझे बिना संगीत सुने ही वापस महल में जाना होगा।“

तानसेन ने कहा- “मेरे मालिक... गुरुजी केवल तभी गाते हैं जब उन्हें लगता है कि सही समय है। हमें धैर्य रखना चाहिए।"

फिर एक सुबह अकबर को एक बहुत ही मुधर स्वर ने नींद से जगा दिया। स्वामी हरिदास गाना गा रहे थे। उनकी आवाज इतनी गहरी और मीठी थी कि सम्राट पूरी तरह मंत्रमुग्ध हो गये थे। उनहोने तानसेन से कहा, "तुम सही थे। वास्तव में स्वामी हरिदास तुमसे बेहतर हैं।"

अकबर ने अब वापस महल लौटने का निश्चय किया। रास्ते में उन्होंने बीरबल से कहा, "बीरबल, "तानसेन का संगीत अपने गुरु के जैसा अच्छा क्यों नहीं है?"

बीरबल बोला, "जहांपनाह! क्योंकि तानसेन आपको खुश करने के लिए गाता है और स्वामी हरिदास भगवान को खुश करने के लिए गाते हैं।"

भगवान और भक्त

अकबर एक मुस्लिम शासक थे, परंतु वह समान रूप से सभी धर्मो का सम्मान करते थे और भगवान के बारे में अधिक जानने के लिए उत्सुक रहते थे। एक दिन उन्होंने बीरबल से पूछा, "क्या यह सच है कि हिंदू पौरणिक कथाओं में देवताओं में से एक देवता ने हाथी को बचाया था, जिसने मदद के लिए उनसे प्रार्थना की थी?"

बीरबल ने कहा, "जी महाराज। हाथियों का राजा गजेन्द्र जब एक मगरमच्छ *** पकड़ लिया गया था, जो उसे मारना चाहता था, तब उसने भगवान विष्णु से प्रार्थना की। भगवान विष्णु ने प्रार्थना सुन ली और वे गजेंद्र को बचाने के लिए आये थे। "

अकबर ने कहा, "गजेन्द्र की रक्षा के लिए भगवान खुद क्यों आये। वह अपने सेवकों को भी भेज सकते थे। उनके पास तो कई सारे सेवक होंगे?"

बीरबल ने कहा, "मैं कुछ ही दिनों में इस सवाल का जवाब दे दूंगा।"

राजकुमार अक्सर अपने एक सेवक के साथ शाम को सैर के लिए जाते थे। बीरबल ने चतुराई से उस सेवक से दोस्ती कर ली और उसे किसी को भी बताने के लिए मना किया कि वे दोस्त थे। फिर वह मोम का एक पुतला लेकर आया, जो बिल्कुल राजकुमार की तरह दिखता था। एक शाम जब राजकुमार सो रहा था, तब बीरबल ने राजकुमार के बजाय सैर के लिए पुतले को ले जाने को सेवक से कहा। सेवक ने वैसा ने ही किया, जैसा बीरबल ने कहा था।

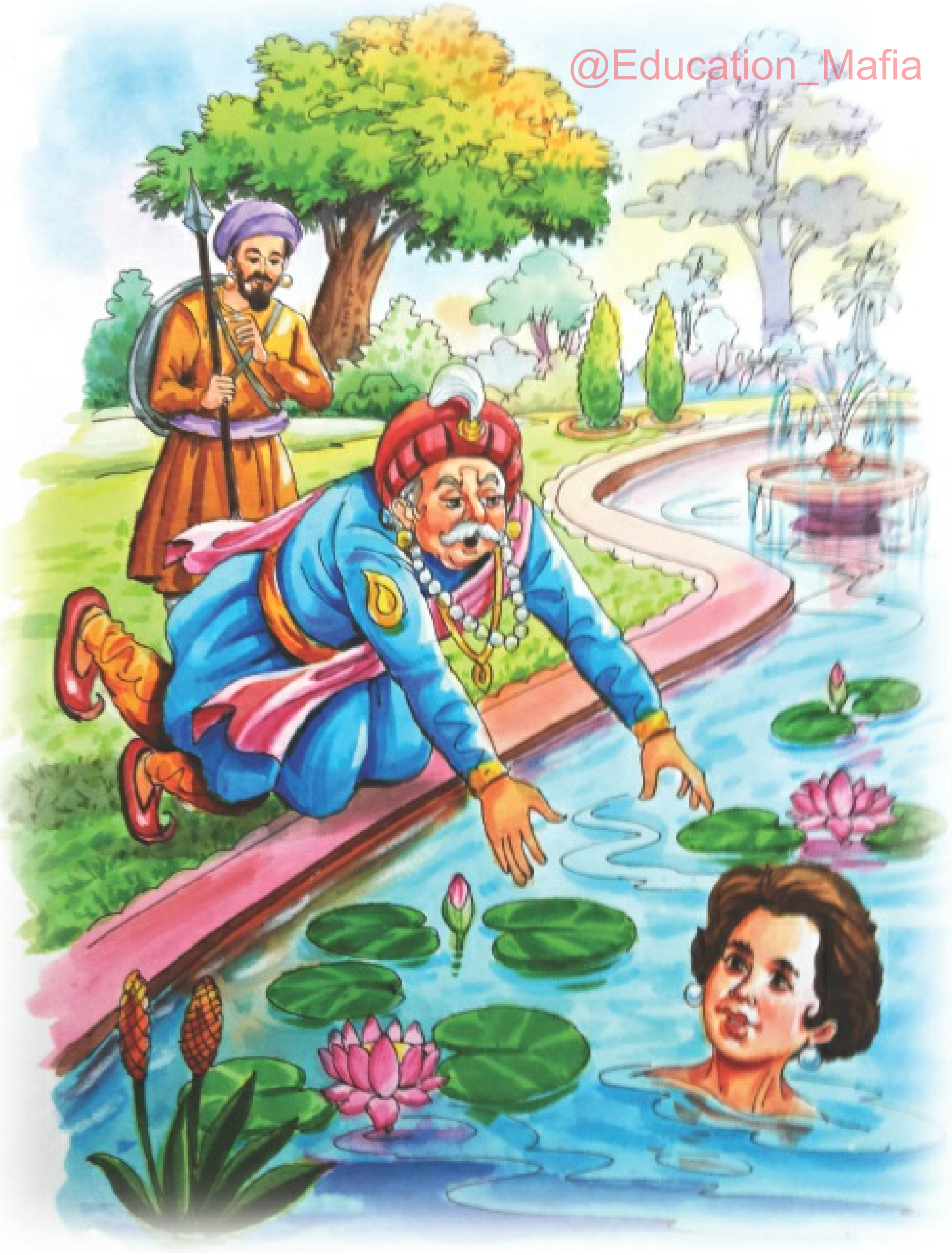

थोड़ी देर बाद वह सेवक अकबर के पास दौड़ते हुए आया और बोला, "जहांपनाह! जल्दी

चलिए, राजकुमार तालाब में गिर गए हैं। वह तैरना नहीं जानते हैं। "

अकबर ने यह सुना तो वह अपने सिंहासन से जोर से उछले और तालाब की ओर भागे। जब वह तालाब पर पहुंचे, तो राजकुमार को बचाने के लिए उसमें कूद गये। अकबर को बहुत राहत मिली, जब उन्हें तालाब में राजकुमार के बचाय राजकुमार की तरह दिखने वाला मोम का एक पुतला मिला। बीरबल बादशाह का पानी से बाहर आने के लिए इंतजार कर रहे थे।

अकबर ने नाराज होकर बीरबल से पूछा, "यह किस तरह का मजाक है?" बीरबल ने कहा, "जहांपनाह! आप खुद क्यों इस तालाब में कूदे? आप राजकुमार को बचाने के लिए सेवक को भी भेज सकते थे। आप के पास तो बहुत सारे सेवक हैं, क्या ऐसा नहीं है?"

अकबर को वह सवाल याद आ गया, जो उसने बीरबल से भगवान के लिए पूछा था। बीरबल ने आगे कहा, "जिस तरह आप अपने पुत्र से प्रेम करते हैं, उसी तरह भगवान भी अपने भक्तों को प्रेम करते हैं। इस प्रेम के कारण ही वह खुद उनकी रक्षा करने आ जाते हैं। आपने उस दिन पूछा था कि गजेन्द्र को मगरमच्छ से बचाने के लिए भगवान विष्णु खुद क्यों आये थे। अब आपके पास जवाब है।"

अकबर ने कहा, "इससे बेहतर मुझे कोई और नहीं समझा सकता था। अब मैं समझ गया।"

भगवान से महान

एक दिन बादशाहा अकबर ने अपने कुछ खास मित्रों को दावत के लिए आमंत्रित किया | बीरबल भी वहां थे | कई प्रकार के लजीज व्यंजन परोसे गए थे और सभी ने दावत का लुत्फ लिया |

रात के खाने के बाद मेहमानों ने मनोरंजन के लिए अनुरोध किया | एक प्रसिध्द कहानीकार को बुलाया गया | उसने अपने हास्य की कहानियां सुनानी शुरू कर दी | अकबर और उसके मेहमान कहानियों पर दिल खोलकर हंसने लगे | अकबर उस कहानीकार से बहुत खुश हुआ और उसने कहानीकार को सोने के सिक्कों की थैली भेंट की | वास्तव में, बादशाहा को कहानियां सुनने में बहुत अधिक रुचि थी और वह कहानीकार कहानी सुनाने में निपुणा था |

उसने बादशाहा से सोने के सिक्कों की थैली ले ली और आदरपूर्वक उनके सामने झुककर अभिवादन किया | उसने कहा, "आप सभी राजाओं में सबसे महान हैं | वास्तव में आप ईश्वर से भी महान हैं |"

जैसे ही कहानीकार ने यह बात कही, दरबार में सन्नाटा छा गया | मंत्रियों ने सोचा," ईश्वर से महान? एक हंसन ईश्वर से महान कैसे हो सकता है?" कहानीकार ने जो कुछ भी कहा, उसे सुनकर अकबर बहुत खुश हुआ | हालांकि वह जानता था कि कहानीकार प्रशंसा के साथ कुछ ज्यादा ही बोल गया, पर अपने आसपास के चेहरों को हैरान देखकर हंसने लगा | उसने कुछ मजा लेने का सोचा |

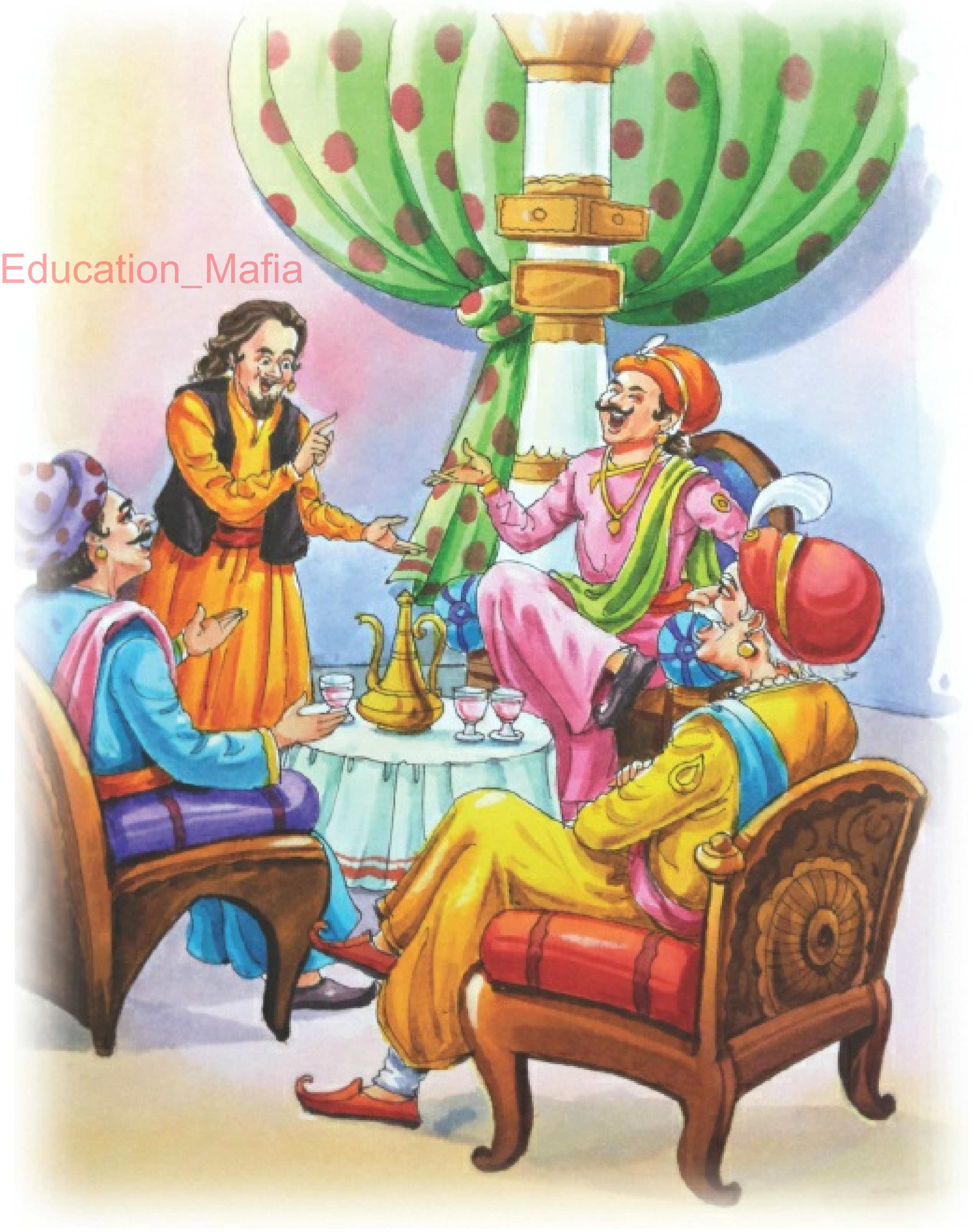

जब कहानीकार जला गया, तब बादशाह अपने मेहमानों और मंत्रियों की तरफ मुड़ा और

बोला, "उस आदमी ने जो कुछ भी कहा है, क्या आप सभी उससे सहमत हैं? क्या आपको लगता है कि मैं ईश्वर से महान हूं?"

मेहमान और मंत्री शांत थे | वे नहीं जानते थे कि क्या उत्तर दें | निशिचत रूप से, बादशाह का अपमान होता और वह उन्हें सजा दे सकते थे | अकबर उन्हें चिढ़ा रहे थे | उन्होंने कहा, "मैं बहुत खुश हूं कि आप मुझे भगवान से भी बड़ा मानते हैं | अब मुझे यह बताओ कि मैं भगवान से महान क्यों हूं?"

मेहमानों और मंत्रियों ने एक दूसरे की तरफ देखा | वह पूरी तरह से निरुत्तर थे | अकबर ने बीरबल की तरफ देखकर कहा, " बीरबल बताओ मुझे, तुम्हें मैं भगवान से बड़ा क्यों लगता हूं?"

बीरबल ने कहा, "जहांपनाह! आप कुछ ऐसा कर सकते हैं जो भगवान भी नहीं कर सकते | आप अपने राज्य से दुष्ट आदमी को निर्वासित कर सकते हैं | भगवान ऐसे नहीं कर सकते हैं |" हालांकि वह ब्रहांड के मालिक हैं, परन्तु क्या वह इंसान को कहीं और भेज सकते हैं? इसलिए आप भगवान से भी महान हैं |"

अकबर की हंसी छूट गयी | उन्होंने इस तरह के एक जवाब के बारे में सोचा भी नहीं था | उन्होंने कहा, "प्रिय बीरबल, आपकी बुद्धि का कोई मुकाबला नहीं है |" मेहमानों और मंत्रियों ने राहत की सांस ली | वह सभी बीरबल के जवाब पर हंसने लगे |

अशुभ चेहरा

बहुत समय पहले, बादशाह अकबर के राज्य में यूसुफ नमक एक युवक रहता था | उसका कोई दोस्त नहीं था, क्योंकि सभी उससे नफरत करते थे | सभी उसका मजाक उड़ाते थे और जब वह सड़क पर चलता तो सब उस पर पत्थर फोंकते थे | यूसुफ का जीवन दयनीय था, सभी सोचते थे कि वह बहुत ही बदनसीब है | लोगा तो यहां तक कहते थे कि यूसुफ के चेहरे पर एक नजर डालने से, देखाने वाले व्यकित पर भी बदनसीबी आ सकती है |

इस प्रकार , भले ही लोग यूसुफ से नफरत कराते थे, पर उसकी कहानी दूर-दराज तक प्रसिद्ध थी | यह अफवाहें अकबर के कानों तक भी पहुंची | वह जांचना चाहता था कि क्या लोगों का कहना सच है | उन्होंने यूसुफ को दरबार में बुलाया और उससे विनम्रता से बात कि |लेकिन उसी वक्त एक दूत ने दरबार में आकार अकबर को सूचित किया कि बेगम गंभीर रूप से बीमार हैं | उस दूत ने कहा, "जहांपनाह! आपसे अनुरोध है कि आप तुरंत रानी साहिबा के कक्ष में चलें| रानी साहिबा बेहोश हो गई हैं और चिकित्सकों को इसका कारण समझ नहीं आ रहा है |"

अकबर बेगम के पास भागे| वे पूरी दोपहर उनके बिस्तर के बगल में बैठे रहे | शाम को जब रानी साहिबा फिर से बेहतर महसूस करने लगी, तब अकबर दरबार में लौट आये| यूसुफ अभी भी उनका इंतजार कर रहा था |

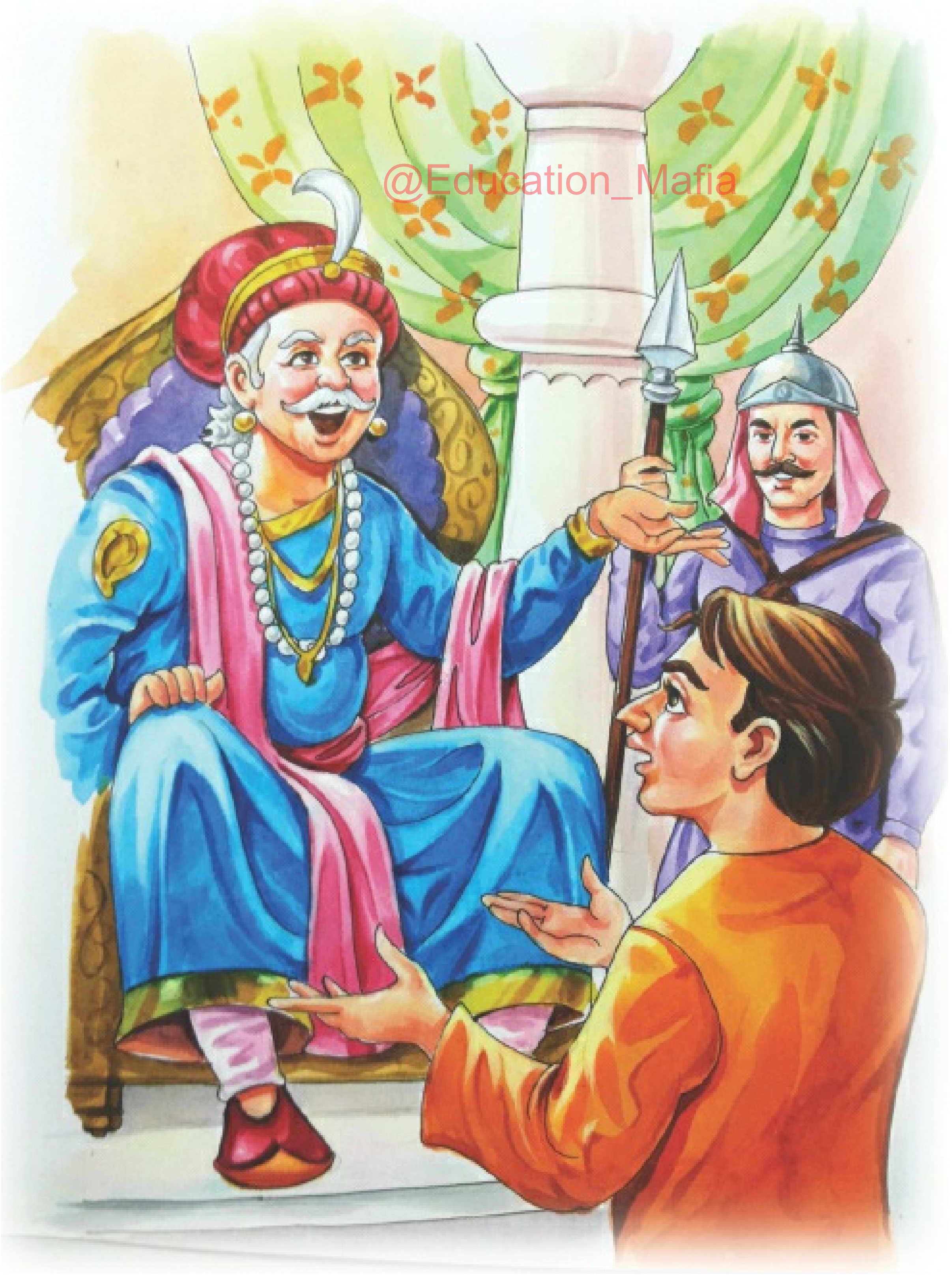

यूसुफ को देखते ही अकबर को गुस्सा आ गया | वे गरजे, "तो सारी अफवाहें सच हैं| तुम

वास्तव में मनहूस हो| तुमने बेगम को बीमार बना दिया है|" उसने जेल के पहरेदारों को यूसुफ को ले जाने का आदेश दे दिया|

बेचारे यूसुफ के पास और कोई चारा नहीं था| वह जोर से चिल्लाया और पहरेदारों से छोड़ने की वीनती की| बादशाह का निर्णय बहुत अनुचित था| लेकिन दरबार में कोई भी सम्राट के विरोध में कुछ भी कहने की हेम्मत नहीं कर पाया|

अचानक बीरबल वहां गया, जहां यूसुफ खड़ा हुआ था, और उसके कान में कुछ फुसफुसाया| यूसुफ बादशाह के सामने झुककर बोला, "जहांपनाह मैं कैदखाने में जाने को तैयार हूं, पर आप मेरे एक सवाल का जवाब दीजिए, "यदि मेरे चेहरे को देखकर रानी बीमार हो गई हैं, तो मेरा चेहरा आपने भी देख है, तो आप बीमार क्यों नहीं हुए |" अकबर को अपनी गलती का एहसास हो गया| उसने यूसुफ को जाने दिया और खजाने में से सोने का एक थैला उसे भेंट किया| एक बार फिर दरबार में बैठे लोगों ने बीरबल के ज्ञान और बुद्धि की प्रशंसा की|

बीरबल की खिचड़ी

अकबर के शहर फतेहपुर सिखरी में सर्दियों के दौरान काफी ठंड पड़ती थी| एक बार, बादशाह ने यह घोषणा करवा दी कि वह सोने के हजार सक्के उसे देंगे जो शाही महल के बाहर स्थित ठंडी झील में पूरी रात खड़े होने की हिम्मत करेगा|

कई दिनों तक अकबर के पास कोई भी नहीं आया| फिर एक दिन एक गरीब ब्राह्मण दरबार में आया| अकबर उस गरीब आदमी को देखकर हैरान रह गए| वह बहुत कमजोर और बीमार था| अकबर ने पूछा, "तुम काफी कमजोर और बीमार हो| तुम इस मिशकील चुनौती को क्यों लेना चाहते हो?"

ब्राह्मण बोला, "मेरे राजा, मैं एक गरीब आदमी हूं| मेरे छोटे –छोटे बच्चे हैं, जो भूखे हैं| मिझे पैसों की जरूरत है|"

अकबर राजी हो गए| ब्राह्मण को दो पहरेदार झील में लेकर गए| ब्राह्मण ने अपने सारे कपड़े उतारकर जल में प्रवेश किया और पहरेदारों की निगरानी में बर्फ जैसे ठंडे पानी में पूरी रात खड़ा रहा| अगली सुबह पहरेदार ब्राह्मण को दरबार में लेकर गए| अकबर ब्राह्मण की बहादुरी पर हैरान था| उसने पूछा, "तुमने सारी रात ठंडे पानी में खड़े रहने के लिए प्तबंध कैसे किया? क्या तुम्हे ठंड नही लगी?"

ब्राह्मण ने कहा, " जी महाराज! मुझे बहुत ठंड लग रही थी पर तभी मैंने उन दीपकों को देखा जो महल के मीनारों में चमक रहे थे| मैं सारी रात उन्हे देखता रहा और उन्होंने मुझे गर्म रखा|"

जब अकबर ने यह सुना तो वह ब्राह्मण से बोला, "दीपक ने सारी रात तुम्हें गर्म रखा है। यह तो धोखेबाज़ी है। तुमने अपना कार्य ईमानदारी से नहीं किया। तुम्हें कोई सोना नही मिलेगा।" और उसने पहरेदारों को आदेश दिया की वे ब्राह्मण को दरबार से बाहर निकाल दें।

गरीब ब्राह्मण बहुत परेशान था। वह जानता था की बादशाह ने उसके साथ अन्याय किया है। लेकिन बादशाह के साथ तर्क कौन करता? वह दुखी होकर घर चला गया। जब यह सब झुआ, तब बीरबल दरबार में उपस्थित था। उसने सोचा, "बादशाह बहुत मनमानी कर रहे

हैं। मुझे उन्हें सबक सीखाना चाहिए, ताकि ब्राह्मण को वह सोने मिल सके जिसका वह हकदार है।" बीरबल अकबर के पास गए और सम्मान के साथ झुक कर कहा, "जहांपनाह! मैंने अपने मित्रों के लिए एक दावत का आयोजन किया है। मैं आपको और सभी मंत्रियों को आमंत्रित करना चाहता हूं। कृपया आज शाम को दावत के लिए मेरे घर पर पधारें।

अकबर यह सुनकर बहुत खुश हुआ। शाम को अकबर ने खबर भिजवाई कि वे आ रहे हैं। परंतु बीरबल ने कहला भेजा कि अभी खाना तैयार नहीं हुआ है। जब तैयार हो जाएगा तो खबर भेज दूंगा। जब बहुत देर तक खबर नही आयी तो अकबर स्वंय अपने मंत्रियों के साथ बीरबल के घर पहूंच गया। पर जब उनहोंने बीरबल को घर के आंगन में देखा तो वे हैरान रह गए। बीरबल थोड़ी सी आग जलाकर उसके पास बैठा हुआ था जबकि जो बर्तन आग पर होना चाहिए था, वह एक पेड़ की एक शाखा पर उंचा लटक रहा था।

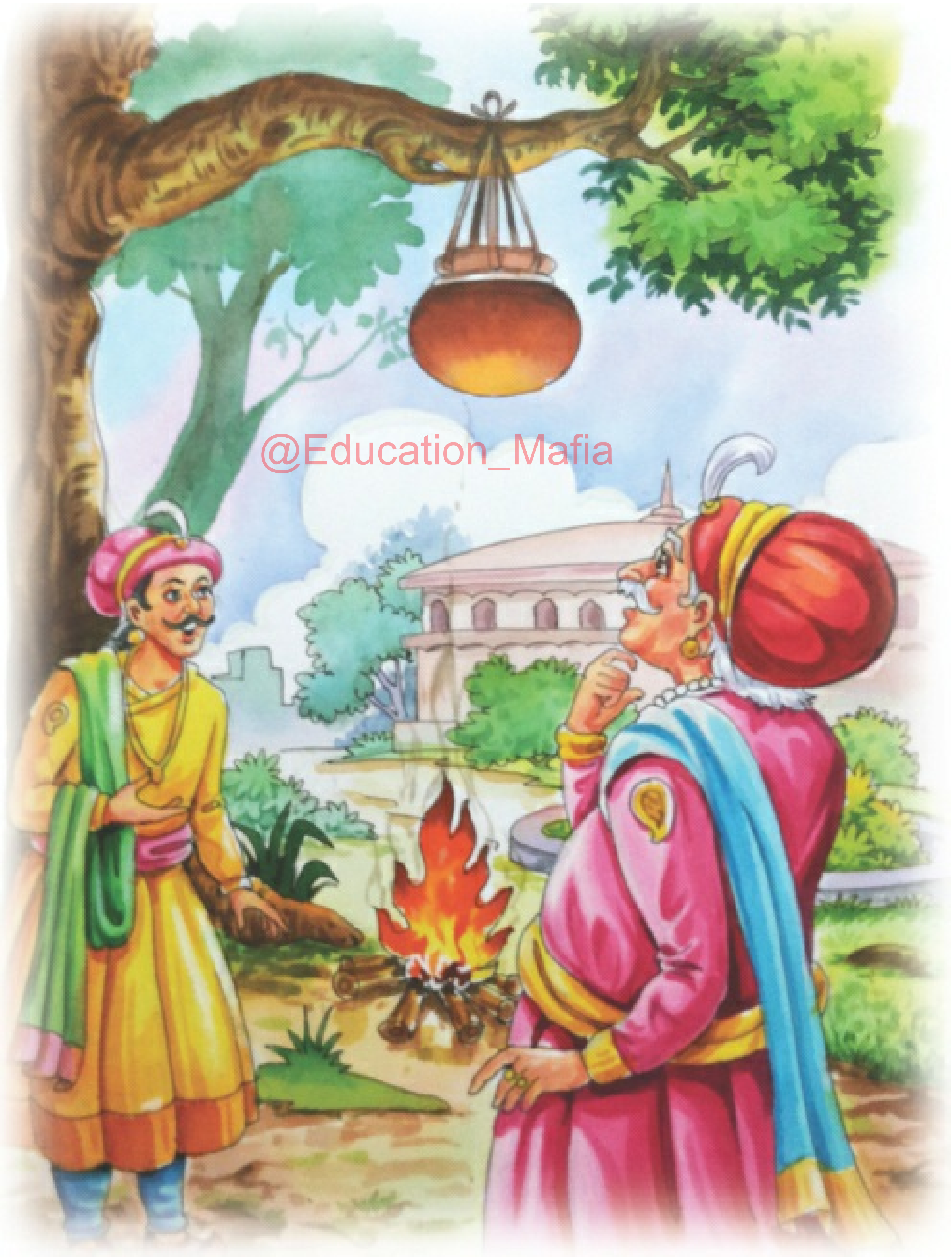

अकबर ने बीरबल से पूछा, "तुम्हें क्या लगता है, की तुम क्या कर रहे हो?" बीरबल ने कहा, "जिल्लेसुभानी! मैं हम सभी के लिए स्वादिष्ट खिचड़ी बना रहा हूं" इस बात पर

बादशाह ज़ोर से हंसने लगे| उन्होंने कहा, "मूर्ख, तुम्हें क्या लगता है, आग से गर्मी खिचड़ी तक पहुंच जाएगी, तुमने बर्तन ऊंची शाखा पर रख दिया है?"

बीरबल ने कहा, "महाराज! आग की गर्मी बर्तन तक उसी प्रकार पहुंच जाएगी, जिस प्रकार महल के दीपक से गर्मी उस दिन गरीब ब्राह्मण तक पहुंची थी।" अकबर ने हंसना बंद कर दिया। उन्हें एहसास हो गया की बीरबल क्या कहना चाहता है। अगले दिन उनहोंने ब्राह्मण को बुलाया और वादे के अनुसार उसे हजार सेने के सिक्के दिए। ब्राह्मण ने बादशाह का आभार व्यक्त किया और आशीर्वाद दिया। अकबर ने बीरबल को देखा तो बीरबल मुस्करा दिए।

मूर्ख व्यक्ति

बादशाह अकबर को बहुत सारे शौक थे। उन्हें शतरंज खेलना और पतंग उड़ाना पसंद था। उन्हें अन्य देशों की कहानियों को सुनना भी पसंद था। लेकिन उनका पसंदीदा शौक घोड़ों का था, उसमें भी अच्छे घोड़ों का संग्रह करना था।

एक दिन घोड़ो का एक व्यापारी महल में आया। उसके पास बेचने के लिए घोड़ों का एक समूह था। बादशाह बाहर आए और घोड़ों को देखा।

बादशाह अकबर ने कहा, "ये बहुत ही सुन्दर घोड़ों हैं। मैं सारे खरीद लूंगा। क्या तुम्हारे पास और भी हैं?"

व्यापारी ने कहा, "नहीं महाराज! पर यदि आप मुझे कुछ धन दे दें, तो मैं अफगानिस्तानजाकर कुछ और घोड़े खरीदकर ले आऊंगा।"

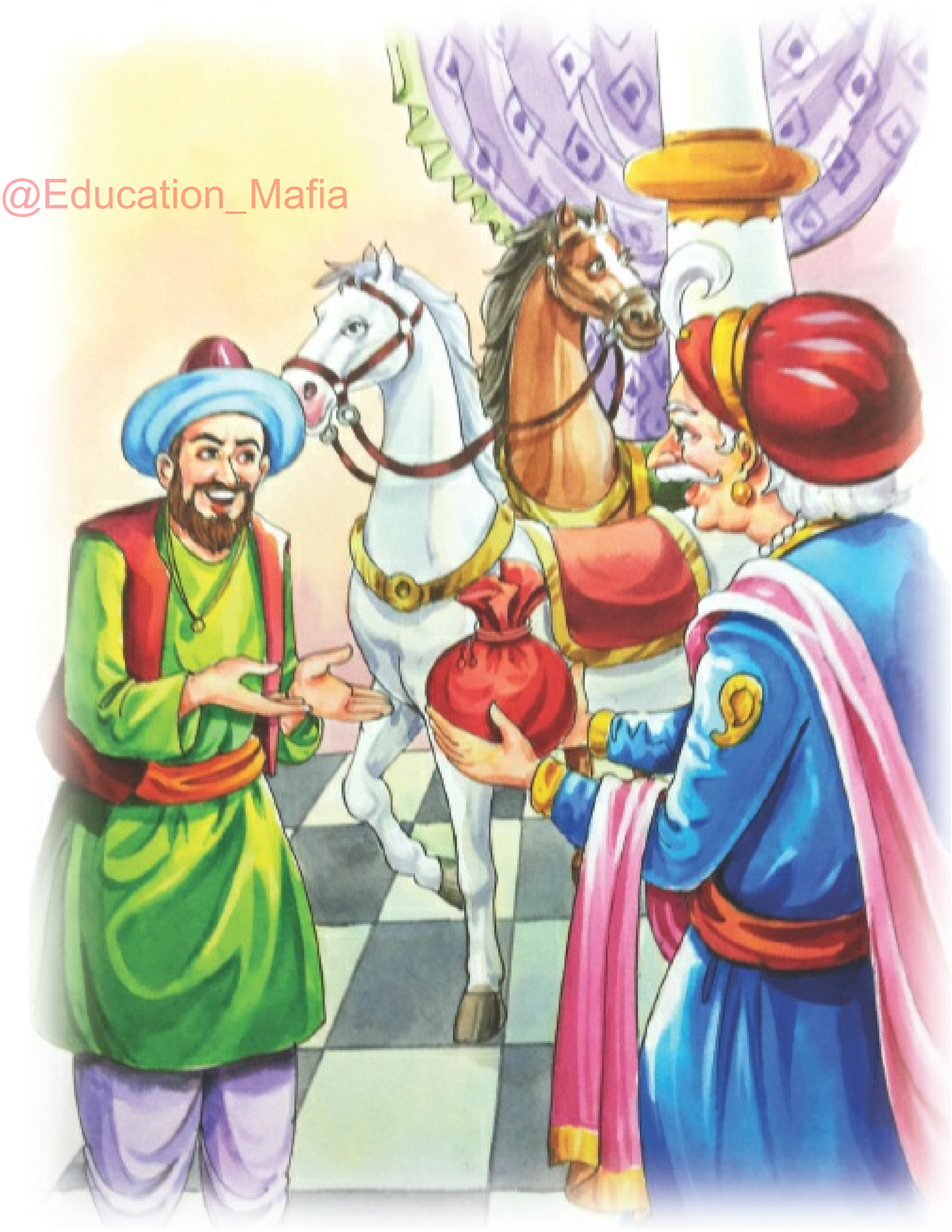

अकबर ने घोड़ों के समूह के सारे घोड़े ले लिये और अफगानिस्तान से अधिक घोड़े लाने के लिए दो सौ सोने के सिक्के दिए। उन्होंने उसे पैसे दिए लेकिन उससे कोई प्रश्न नहीं पूछा।

यह भी नहीं पूछा कि उसका नाम क्या था, वह कहां से आया था, या वह कहां रहता था। घोड़ों के व्यापारी ने पैसे लिए और वहां से चला गया। कई दिन बीत गए घोड़ों का व्यापारी वापस नहीं लौटा। कुछ दिनों के बाद, अकबर ने बीरबल से भारत में दस सबसे बड़े मूर्खों की एक सूची बनाने के लिए कहा। बीरबल ने यह सूची तुरंत बनाकर बादशाह को सौंप दी। जैसे ही अकबर ने सूची को पढ़ना शुरू किया, वह हैरान रह गए और फिर बहुत क्रोधित हुए। बीरबल ने अकबर का नाम सूची में सबसे ऊपर लिखा था।

"बीरबल, यह क्या है?" बादशाह चिल्लाए। "मेरा नाम सूची में सबसे ऊपर क्यों हैं?"

"जहांपनाह! ऐसा इसलिए क्योंकि आप सभी लोगों में सबसे बड़े मूर्ख हैं।" बीरबल ने कहा।

"तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे हुई.. ?" अकबर ने बीरबल के शब्दों से आहात होते हुए कहा।

बीरबल ने आगे कहा, "महाराज! आपने एक अजनबी को इतना ज्यादा पैसा दे दिया और यह भी नहीं पुंछा कि वह कौन था, कहां से आया था, क्या यह मूर्खता नहीं है?"

अकबर ने कहा, "यदि वह आदमी धोड़ों के साथ वापस आ जाएगा, तो क्या होगा?"

महाराज, यदि वह आदमी धोड़ों के साथ वापस आ जाएगा, तो मैं सूची में सबसे ऊपर से आपका नाम हटा दूंगा और उसका नाम लिखा दूंगा।" बीरबल ने कहा।

अकबर को यह यहसास हो गया था कि उन्होंने वास्तव में मूर्खता की थी।

www.devedunotes.com

खूबसूरत बच्चा

एक बार, बादशाह अकबर ने दरबार में यह घोषणा कारवाई कि उनका पोता पूरे देश में सबसे सुंदर बच्चा है | वह अपने नवजात पोते को बहुत प्यार करते थे | अकबर अपने पोते से इतना अधिक प्यार करते थे कि उस बच्चे के जन्म के बाद अकबर मुश्किल से सम्राट के रूप में अपने कर्तव्यों पर ध्यान केंद्रित कर पा रई थे | वह बच्चे के साथ पूरा दिन खेलते रहते थे | इससे सभी मंत्री बहुत परेशान हो गए |

इसलिए जब अकबर ने कहा, कि उसका पोता देश का सबसे सुंदर बच्चा है तो बीरबल ने कहा, "जहांपनाहा, कृपया नाराज न हो आप | राजकुमार निसंदेह बहुत खूबसूरत हैं पर मेरे ख्याल से और भी बच्चे हैं जो इनसे भी ज्यादा सुंदर हैं |"

अकबर ने जब यह सुना तो वे बहुत क्रोधित हुए | उसने कहा, " तुम ऐसा कैसे कह सकते हो ? मैं सभी मंत्रियों को यह आदेश देता हूं कि वह उस बच्चे को लेकर आएं जिसे वह साबसे ज्यादा सुंदर समझते हैं | यदि वह बच्चे मेरे पोते से ज्यादा सुंदर हुए तो मैं सहमत हो जाऊंगा जैसा बीरबल ने कहा है |"

इसलिए अगले दिन हर मंत्री अपने साथ एक बच्चा लेकर दरबार में आया | पर बीरबल कहीं दिखाई नहीं दे रहा था | फिर कुछ समय के बाद बीरबल दरबार में आया | वह पसीने से भीगा हुआ था | अकबर ने पूछा, " कहां है वह बच्चा चिसे तुमने मेरे पोते से ज्यादा सुंदर बताया था ?" बीरबल ने कहा, "महाराज, मैंने दरबार में बच्चे को लाने की कोशिश की, लेकिन उसकी मां ने मुझे ऐसा करने नहीं दिया | यदि आप एक सामान्य इंसान की तरह तैयार हो सकते हैं, तो हम बच्चे को दिखने के लिए जा सकते हैं |"

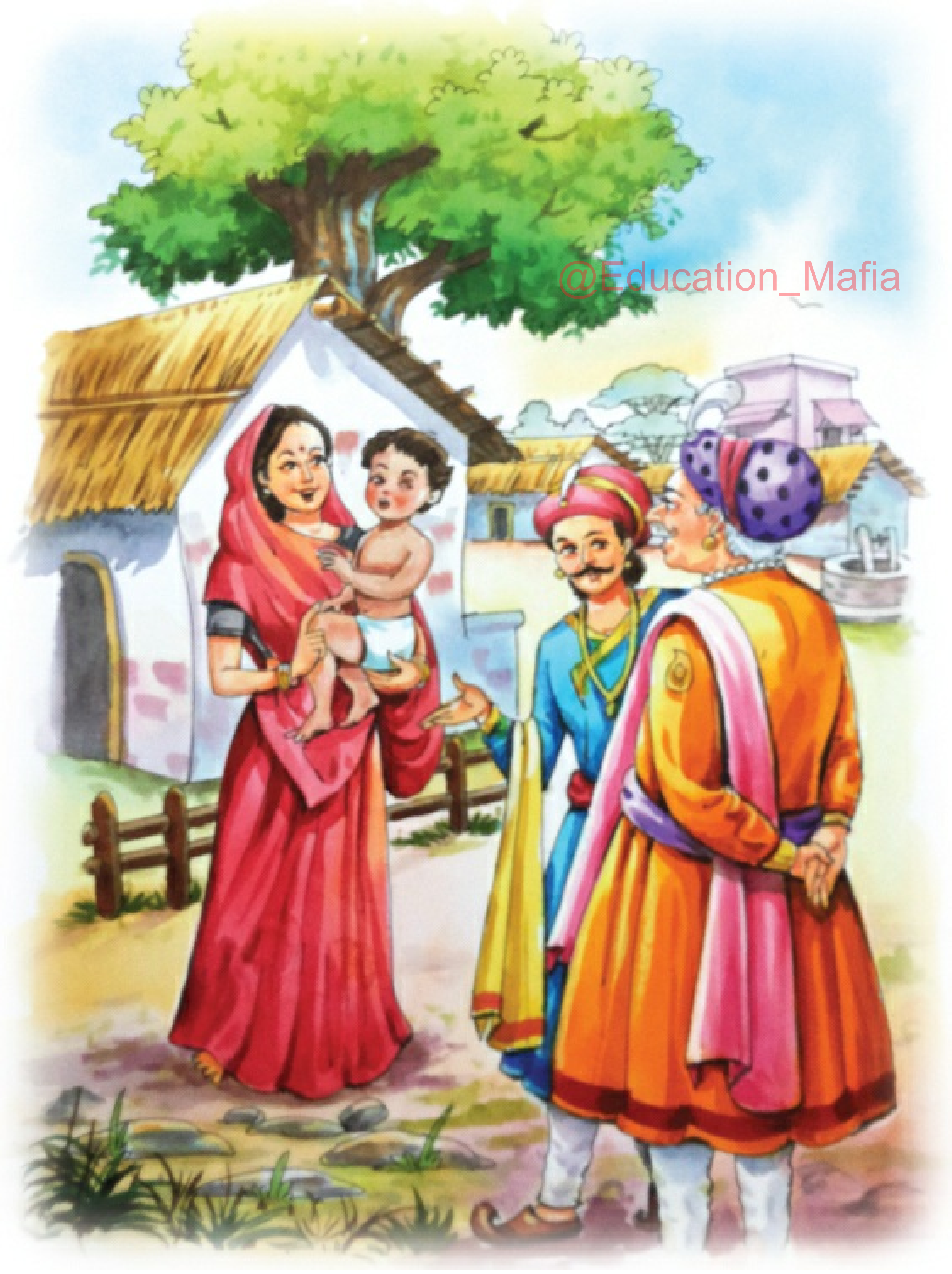

अकबर और उसके कुछ मंत्रियों ने सामान्य लोगों की तरह कपड़े पहन लिए और बीरबल के सथा उस बच्चे को देखने चल पड़े | लंबे समय तक चलने के बाद वे एक झोपड़ी के पास पहुंचे | एक बच्चा झोपड़ी के बाहर गंदगी के ढेर पर खेल रहा था | वह गंजा था और धूल में लिपटा हुआ था | उसकी एक आंख दूसरी आंख से छोटी थी और उसकी नाक से पानी गिर रहा था | अकबर ने बीरबल से कहा, "आपको लगता है कि यह बच्चा राजकुमार से अधिक सुंदर है?"

" यह तो बहुत ही बदसूरत है! " जैसे ही अकबर ने यह कहा, बच्चे की मां झोपड़ी से बाहर आ गई | वह उस आदमी पर बहुत गुस्सा होने लगी, जो उसकी झोपड़ी के समाने खड़ा होकर उसके बच्चे को घूर रहा था | उसने कहा, " तुम कौन हो ? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे बच्चे को बदसूरत कहने की | निकल जाओ यहां से !" और फिर उसने बच्चे को गोद में उठा लिया, अपने साड़ी के पल्लू से उसका चेहरा पोछते हुए उसे चूम लिया | उसने बच्चे से कहा, "मेरे प्यारे बेटे, इन लोगों को मत सुनो, तुम इस देश में सबसे सुंदर बच्चे हो |" और वह छोटे बच्चे को अंदर ले गई |

अकबर समझ गया कि बीरबल क्या कहना चाहता था | उसने कहा, "अपने माता – पिता के लिए हर बच्चा देशा में सबसे सुंदर होता है |" बीरबल मुस्कराया और कहा, "और समय आने पर अपने दादा दादी के लिए भी |"

www.devedunotes.com

अनोखा निमंत्रण

बादशाह अकबर अक्सर बीरबल के साथ अपना आपा खो देते थे। एसे ही एक अवसर पर, उन्होंने बीरबल को शाही दरबार छोड़ने को और कभी वापिस न लौटने को कहा। इससे बीरबल को बहुत दुख हुआ और एक रात उसने किसी को बताए बगैर शहर छोड़ दिया।

कुछ देनों बाद, अकबर को बीरबल की याद आने लगी। उन्हे एहसास हुआ कि वह बेचारे बीरबल पर कुछ ज्यादा ही कठोर हो गए थे। इसलिए अकबर ने अपने दूत को पास के गांव और शहर में उसे देखने के लेए भेजा। लेकिन अफसोस। दूतों में से कोई भी बीरबल को खोज नहीं पाया।

अकबर ने सोचा, "बीरबल ने अपना वेश बदल लिया होगा। इसलिए दूत उसे खोजने में असफल हो रहे हैं। बीरबल को खोजने का कुछ और ही रास्ता होना चाहिए।

अकबर ने सभी शहर के राजाओं को निमंत्रण पत्र भेजने के लिए अपने मंत्रियो को आदेश दिया। निमंत्रण पत्र पढ़ने में बहुत अजीब था, "मेरे राज्य का समुद्र शादी करना चाहता हैं। आपके राज्य की सभी नदियां आदर सहित आमंत्रित हैं। शादी अगले सप्ताह होनी है इसलिए कृपया उन्हें शीघ्र भेजें।"

सभी राजाओं को जब यह निमंत्रण मेला तो वे बहुत हैरान हुए। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे उत्तर में क्या लिखें। इसलिए उन्होंने नेर्णय किया कि वे निमंत्रण का उत्तर नहीं देंगे और एसे नाटक करेंगे कि उन्हों निमंत्रण प्राप्त ही नहीं हुआ| लेकिन कुछ दिनों बाद, बादशाह अकबर को एक राजा का जवाब मिला| उसमें लिखा था, “आपके आमंत्रण के लिए बहुत बहुत धन्यवाद| हम शादी के लिए अपनी नंदियों को खुसी-खुसी भेजना चाहते हैं, परंतु हमारी नदियों ने अनुरोध किया है कि समुद्र को उन्हों लेने के लिए आधे रास्ते आना होगा|”

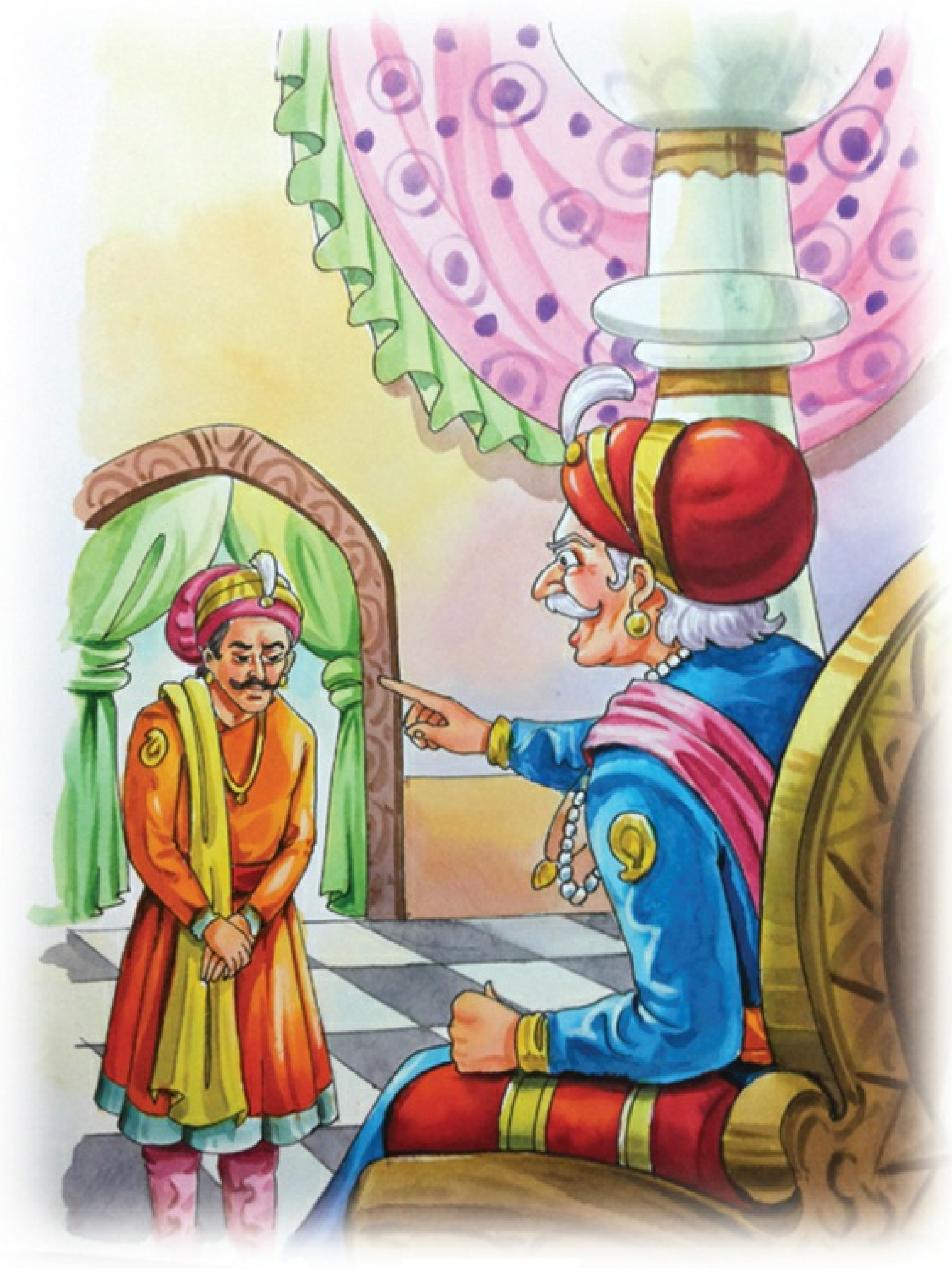

यहा जवाब पढ़कर अकबर बाबूत देर तक बभूत जोर से हंसने लगे| फिर वह बीरबल को वापस आने का अनुरोध करने के लिए अपने सौनिकों के साथ उस राजा के शहर गये| अकबर ने सही अनुमान लगाया था| दरअसल, बीरबल उसी राजा के साथ रह रहा था, जिसने जवाब भेजा था| अकबर जब बीरबल से मिले, तो बहुत खुश हुए| उन्होंने कहा, "मैं आपको चोटे पहुंचाने के लिए माफी चाहता हूं| कृपया दरबार में लौट आईये|"

बीरबल भी यह देखकर बाहुत खुश था कि बदशह उसे लेने खुद आए हैं| उसने राजा को एक बड़ी विदाई देकर अकबर के साथ शहर छोड़ दिया|

मीठा दंड

एक दिन, बादशाह अकबर बहुत विचारशील मुद्रा में दरबार में आए! उन्होंने दरबार में उपस्थित अपने सभी मंत्रियों की तरफ देखा और कहा, "माननीय मंत्री, मुझे बताएं कि जिसने मेरी दाढ़ी खींचने की हिम्मत की है, उसे मैं कौन सी सजा दूं?"

दरबार में सभी इस तरह के अजीब सवाल पर चिंतित हो गए! इस प्रकार के अपराध के लिए हर कोई आपस में चर्चा करने लगा। कौन बादशाह की दाढ़ी खींचने की हिम्मत करेगा?

मंत्रियों में से एक ने कहा, "महाराज, जिस किसी ने भी यह हरकत करने की कोशिश की है, उसके हाथ काट लेने चाहिए।"

दूसरे मंत्री ने कहा, "जी महाराज, उसे मृत्यु की सजा ही मिलनी चाहिए।"

फिर एक और मंत्री ने खड़े होकर कहा, "महाराज, इस तरह के दैत्य को उम्र कैद की सजा मिलनी चाहिए। उसे चूहों के साथ तहखाने में फेंक देना चाहिए।"

उपयुक्त सजा के लिए कई विचार आने लगे। जैसे वह चर्चा में बढ़ते गए सभी मंत्री और भी रचनात्मक होते गए। अकबर और भी मजे के साथ उन सभी की बातों को सुन रहा था। अंत में उन्होंने बीरबल की तरफ देखा और कहा, "क्यों प्रिय बीरबल, तुम इतने शान्त क्यों हो? तुम्हारे मुताबिक मेरी दाढ़ी खींचने की हिम्मत करने वाले के लिए उपयुक्त सजा क्या होनी चाहिए?"

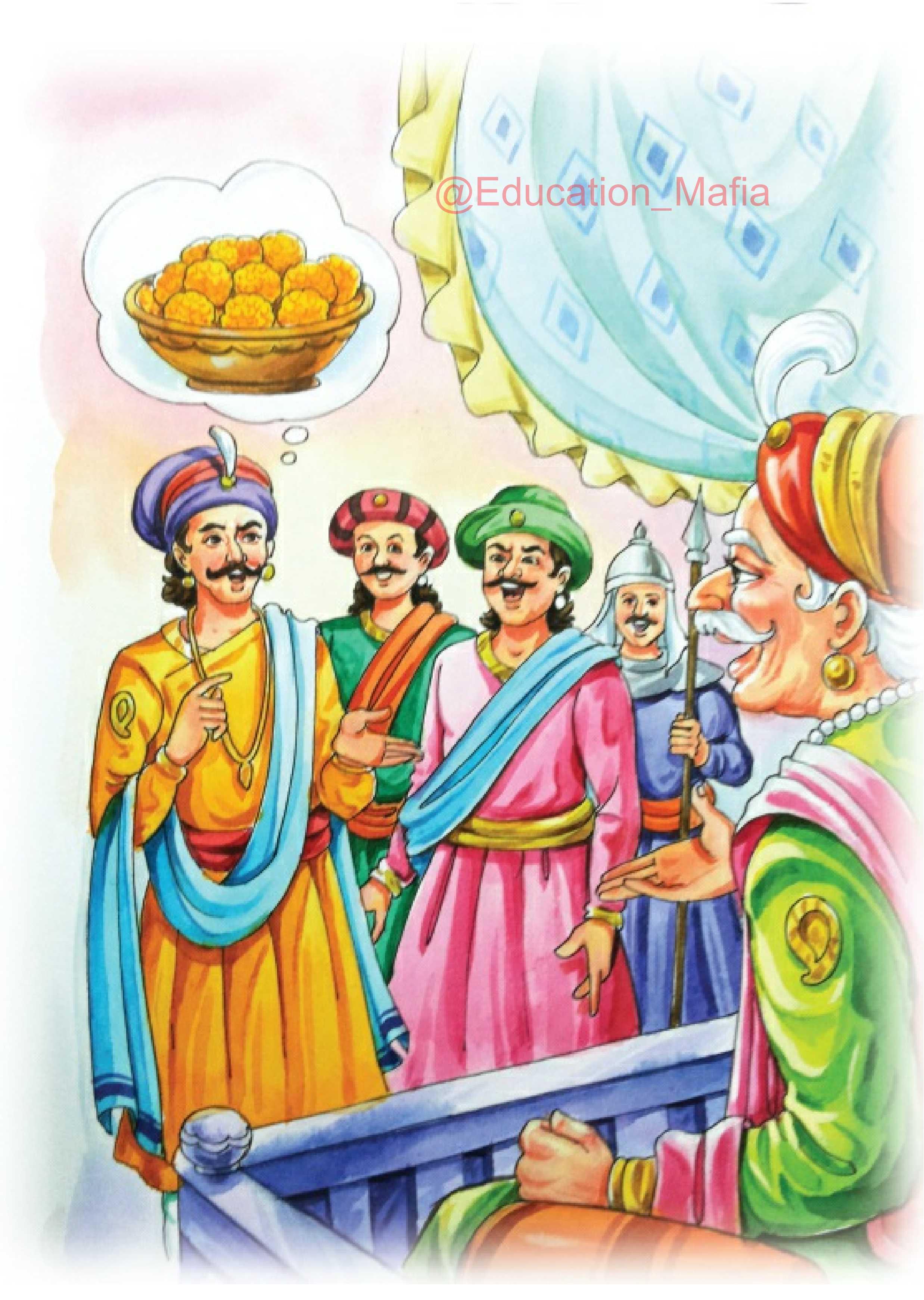

बीरबल उठा और बादशाह की ओर सम्मान से सिर झुकाकर बोला, "महाराज। उस पर चुंबन की बौछार करनी चाहिए, उसे गले लगाना चाहिए और उसे खाने के लिए खूब सारी मिठाईया देनी चाहिए।"

यह सुनकर दरबार में सभी एकबार फिर हैरान हो गए। एक मंत्री ने कहा, महाराज। बादशाह की दाढ़ी को मिठाईया दी जायें?" अकबर मुस्करा रहे थे। उन्होंने बीरबल से पूछा, "आपको क्यों लगता है कि यह एक उपयुक्त सजा है?" बीरबल ने जवाब दिया, "महाराज, आपके पोतों के अलावा आपकी दाढ़ी खींचने की हिम्मत और कौन करेगा?"

बीरबल सही था।उस सुबह, जब बादशाह अपने पोते के साथ खेल रये थे, तब उसने शहरारत से अपने दादा की दाढ़ी को खींच लिया था।अकबर ने सोचा, यह अपने मंत्रियों की परीक्षा लेने का एक अच्छा विचार है, इसलिए उन्होंने यह अजीब सवाल पूछा था।

केवल बीरबल सही ढंग से सवाल का जवाब देने में सक्षम था।अकबर ने उसके बुद्धिमान विचार के लिए सोने का एक थैला बीरबल को भेंट किया।

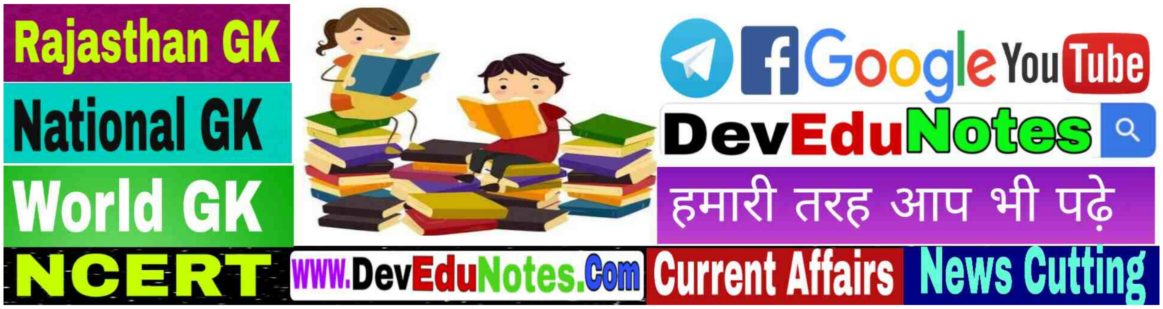
Rajasthan GK
National GK
World GK
NCERT
Google
YouTube
DevEduNotes
हमारी तरह आप भी पढ़े
www.DevEduNotes.Com
Current Affairs
News Cutting

www.devedunotes.com

कहानियों द्वारा बच्चों का बौद्धिक और चारित्रिक निर्माण हो यही इस पुस्तक की प्रेरणास्रोत है। प्राचीन काल में संयुक्त परिवार में दादा–दादी, नाना–नानी बच्चों का कहानियों के माध्यम से चारित्रिक, संस्कारिक निर्माण करते थे। परंतु आजकल एकल परिवार समय के अभाव में अपने दायित्वों से विमुख हो रहे हैं।

हमारे प्रकाशन का प्रयास है कि अभिभावक अपने बच्चों को सुसंस्कारित, चरित्रवान और योग्य नागरिक बना सकें एवं बच्चे भी इस पुस्तक को पढ़कर लाभान्वित हों।

अकबर और बीरबल की कहानियां हमारे देश में सभी आयु के लोगों द्वारा पंसद की जाती है। इन कहानियों के द्वारा बीरबल की हाजिरजवाबी, बुद्धि और तेज दिमाग का पता चलता है। अकबर और बीरबल की प्रसिद्ध कहानियों को हमने इस पुस्तक मे संग्रहित किया है।

www.maplepress.co.in
Maple Press
children
ISBN: 978-93-5033-908-4
₹ 80

www.devedunotes.com